कर्णावती दर्पण

वर्ष : 2016-17 विभागीय हिंदी पत्रिका अंक – 6

वस्तु एवं सेवा कर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद उत्तर

हमारा आयुक्तालय परिवार

सहायक आयुक्त श्रीमती पारुल श्रीवास्तव के साथ नरोडा मंडल परिवार

सहायक आयुक्त श्री कौशिक डी. भट्ट के साथ नरोडा रोड़ मंडल परिवार

सहायक आयुक्त श्री जयंत मलयांडी के साथ साणंद मंडल परिवार

सहायक आयुक्त श्री आदेश कुमार जैन के साथ चांगोदर मंडल परिवार

सहायक आयुक्त श्री राहुल परमार के साथ धोलका मंडल परिवार

सहायक आयुक्त श्री किरण मोहाड़ीकर के साथ एसजी हाईवे पश्चिम मंडल परिवार

कर्णावती दर्पण

वर्ष - 2016-17 अंक - 6

वस्तु एवं सेवा कर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय,
अहमदाबाद उत्तर की विभागीय हिंदी पत्रिका

सरस्वती वंदना

ऐसा वर दे शारदे माता...!!!

निर्मल कर दे सबकी वाणी
तुम हो मां जगत कल्याणी
जिसके सर पर हाथ हो तेरा
मन वांछित फल वो है पाता...!!!

तम हर के प्रकाश फैला दो
ज्ञान के दीपक जग में जला दो
वीणा वादिनी तान से तेरी
हम सब का भ्रम है मिट जाता...!!!

चहके पक्षी, मानव गाये
भेदभाव सबके मिट जाये
ज्ञान विज्ञान का हो उजियारा
'सारंग' हाथ जोड़ यही गाता...!!!

दिनेश कुमार जांगिड़ 'सारंग'

अस्वीकरण :- इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

सरंक्षक

अजय जैन, मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक

जे. ए. खान, आयुक्त

प्रबंध संपादक

राजमोहन गौतम, अपर आयुक्त

संपादक

दिनेश कुमार जांगिड़, उपायुक्त

सह-संपादन

अविनाश कुमावत, कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्रं.	शीर्षक / रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	सरस्वती वंदना / दिनेश कुमार जांगिड़	1
2	मुख्य आयुक्त का संदेश / अजय जैन	3
3	प्रधान संपादक की कलम से / जे. ए. खान	5
4	प्रबंध संपादक की कलम से / राजमोहन गौतम	6
5	संपादकीय / दिनेश कुमार जांगिड़	7
6	आयुक्तालय की गतिविधियां	9
7	शे'र संकलन / नरेन्द्र गोखरू	18
8	मेहमान का पन्ना / इकराम राजस्थानी	19
9	कविताएं / दिनेश कुमार जांगिड़	21
10	चित्रावली	22
11	कविताएं / नेहा	24
12	कविताएं / प्रणेश गुप्ता / संजय श्रीवास्तव	25
13	कविताएं / राजेश जांगिड़ / सुमित कुमार	26
14	गज़लें / आर. के. चौहान	27
15	संस्कार के बीज / प्रणेश गुप्ता	28
16	कैसे लिखे रोमन अंक / राजमोहन गौतम	29
17	पुनर्जन्म / हमीराराम चौधरी	30
18	जीएसटी : एक नवीन युग का सूत्रपात / ज्ञानचंद जैन	31
19	दुआ–बद्दुआ की सप्लाई / राहुल परमार	32
20	तीर्थ नगरी पुष्कर / आर डी मीणा	33
21	जानिए अपने मन की असीम शक्ति / भावना सती	34
22	तकनीक के सहयोग से राजभाषा का विकास / दिनेश कुमार जांगिड़	35
23	कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रयोग / अविनाश कुमावत	37
24	व्यस्त रहो, मस्त रहो / बालकृष्ण तिवारी	39
25	सोशल मीडिया और स्मार्टफोन से व्यसनमुक्तिःआज की जरूरत / राहुल परमार	40
26	दरियाई गश्त की रोमांचक दास्तां / सुनिल कुमार मेहता	41
27	जिसकी लाठी उसकी भैंस / जिग्नेश शाह	42
28	हमारा आयुक्तालय परिवार	43

सत्यमेव जयते

मुख्य आयुक्त का कार्यालय
वस्तु एवं सेवा कर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क
अहमदाबाद जोन
सातवां तल, जीएसटी भवन
अंबावाड़ी, अहमदाबाद

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हुई है कि पूर्ववर्ती आयुक्तालय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अहमदाबाद–2 की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए नवीन आयुक्तालय वस्तु एवं सेवाकर तथा के. उ. शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद उत्तर द्वारा 'कर्णावती दर्पण' का छठा संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे यह जानकर और भी प्रसन्नता है कि जीएसटी लागू होने के पश्चात अहमदाबाद जोन में किसी आयुक्तालय द्वारा प्रकाशित यह प्रथम पत्रिका होगी।

संविधान का अनुच्छेद 351 हमें यह निर्देशित करता है कि हम राजभाषा का प्रचार–प्रसार एवं विकास करें तथा भारत की सामासिक संस्कृति और गंगा–जमुनी तहजीब को पोषित एवं पल्लवित करें। इसी भावना के अनुरूप 'कर्णावती दर्पण' जैसे विभागीय प्रकाशन राजभाषा के प्रचार प्रसार में योगदान देते हुए भारत संघ के कार्मिकों को राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं और हिंदी को आम लोगों में लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका अदा करते हैं।

मैं 'कर्णावती दर्पण' के संपादक–प्रकाशक मंडल और अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय को बधाई देता हूँ तथा यह कामना करता हूँ कि राजभाषा के प्रचार–प्रसार की यह धारा इस तरह के प्रकाशनों के माध्यम से अविरल बहती रहे।

अजय जैन
मुख्य आयुक्त

अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा -- संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश -- संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

- महात्मा गांधी

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में प्रांतीय भाषाओं को हानि नहीं वरन लाभ होगा।

- अनंतशयनम

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गांधी

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

- स्वामी दयानंद

हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति।

- रामवृक्ष बेनीपुरी

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है।

- टी. माधवराव

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।

- वाल्टर चेनिंग

राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है।

- अवनींद्रकुमार विद्यालंकार

प्रधान संपादक की कलम से...

विभागीय हिंदी पत्रिका 'कर्णावती दर्पण' पत्रिका का छठा अंक आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। यह जानकर आनंद और भी बढ जाता है कि कर्णावती दर्पण ने पांच सफल पड़ाव पार कर जीएसटी युग में प्रवेश कर अहमदाबाद जोन में किसी जीएसटी आयुक्तालय की प्रथम पत्रिका बनने का गौरव प्राप्त कर लिया है।

अपने पिछले अंकों की विषेशताओं को समेटते हुए 'कर्णावती दर्पण' का यह अंक विभिन्न रूचिकर समसामयिक आलेखों, साहित्य की विभिन्न विधाओं एवं आयुक्तालय की विभिन्न गतिविधियों को शामिल किये हुए है, जो इसे और भी बेहतर एवं प्रासंगिक बनाते हैं।

मेरे संज्ञान में यह तथ्य लाया गया है कि इस आयुक्तालय में तीन चौथाई अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी मे प्रवीणता प्राप्त हैं और इस लिहाज से 'कर्णावती दर्पण' का यह अंक उनके हिंदी ज्ञान एवं रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बन सकेगा। साथ ही यह अंक आयुक्तालय में हो रही राजभाषा से संबंधित गतिविधियों का भी एक आईना बन सकेगा।

इस पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी को मैं 'कर्णावती दर्पण' के प्रकाशन के लिये बधाई देता हूँ और इसमें सहयोग करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। राजभाषा का विकास हमारा अपना विकास है। इसकी उन्नति हमारी अपनी उन्नति है। इसके प्रचार–प्रसार एवं विकास में हम सदैव इसी तरह प्रयत्नशील रहें, यही मेरी कामना है।

जे. ए. खान
आयुक्त

प्रबंध संपादक की कलम से...

मेरी जानकारी में जब यह बात आई कि पूर्ववर्ती अहमदाबाद–2 आयुक्तालय द्वारा विभागीय पत्रिका 'कर्णावती दर्पण' के पांच अंक प्रकाशित हो चुके हैं तब मन में एक संकल्प आया कि इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए वस्तु एवं सेवा कर युग में नवसृजित अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय के द्वारा भी अगले अंक का प्रकाशन किया जाना चाहिये। आयुक्त महोदय ने भी पत्रिका प्रकाशन के कार्य को तुरंत मंजूरी प्रदान कर दी। संपादकीय मंडल का गठन हो गया और आयुक्तालय के उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ के संपादकत्व में पत्रिका का कार्य अविलंब आरंभ भी हो गया।

विभागीय पत्रिकायें किसी भी विभाग का आईना होती है। यह पत्रिकायें संबंधित विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कार्यशैली का प्रतिनिधित्व करती हैं और उनकी सृजनात्मक क्षमता की पहचान दुनिया से करवाती है। कर्णावती दर्पण में भी हमारे आयुक्तालय के सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने रचनाओं के रूप में बढ़–चढ़कर योगदान दिया है।

पत्रिका के वैचारिक संकल्प से लेकर इसे मूर्त रूप प्रदान करने तक की यात्रा को सफल बनाने में योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों को मैं इतने सुंदर एवं सफल प्रकाशन के लिये बधाई देता हूँ। मैं यही कामना करता हूँ कि देश के सभी कार्यालयों में राजभाषा का इसी तरह से प्रचार–प्रसार होता रहे।

राजमोहन गौतम

अपर आयुक्त

अपनी बात

आधुनिक हिंदी भाषा के प्रेरक भारतेन्दु ने कहा था– '**निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल**'। यह बात आज के परिवेश में भी शत–प्रतिशत उचित प्रतीत होती है। जो देश अथवा जो राज्य अपनी भाषा में ज्ञान–विज्ञान का प्रचार–प्रसार कर पायें हैं, वही यथोचित एवं सतत विकास कर पायें हैं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर संविधान निर्माण तक हिंदी भाषा ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और गांधीजी सहित हमारे संविधान निर्माताओं ने इस भूमिका को समझते हुए हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया। संस्कृत, ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, उर्दू, अरबी फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली सहित तमाम देशी एवं विदेशी शब्दों की विशेषताओं से युक्त हिंदी भारत की राजभाषा बनने के सर्वथा उपयुक्त भी थी। हिंदी ने कभी अपने दरवाजे बंद नहीं किये और खड़ी बोली हिंदी के जनक भारतेन्दु की भावनाओं– ''**विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देसन से लै करहु, भाषा माहि प्रचार।।**''– के अनुरूप आज भी हिंदी अपना विकास कर रही है। कश्मीर से कन्याकुमारी एवं कच्छ से तवांग तक संपर्क भाषा के रूप में इसी का प्रयोग होता है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी यह एक आदर्श भाषा के सर्वथा निकट है।

किसी भी भाषा का विकास तब ही संभव होता है जब बोलचाल के साथ–साथ राजकाज की भाषा भी वही हो। भारत के अनेक प्रांतों में राजभाषा या तो हिंदी है अथवा सह राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। केन्द्र सरकार के कार्यालयों में भी हिंदी में कार्य पर जोर दिया जा रहा है और पिछले कुछ वर्षों में बहुत–सा मूल कार्य एवं अनुवाद हिंदी में होने लगा है।

अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय में भी राजभाषा को लेकर सभी व्यक्तियों का दृष्टिकोण बेहद सकारात्मक रहा है। इस आयुक्तालय के मेरे कुछ ही महिनों के अल्प कार्यकाल में राजभाषा से संबंधित इतने कार्य यहां हुए जिसकी कल्पना मैंने भी नहीं की थी। स्वयं आयुक्त महोदय ने राजभाषा में कार्य का आरंभ किया और यह

बहुत ही सुखद है कि आयुक्त महोदय सभी पत्रों पर हिंदी में निर्देश लिखते हैं और टिप्पणियां भी हिंदी में ही करते हैं। जब संस्थान का मुखिया स्वंय इस तरह प्रेरणा दें तो राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं विकास की यह धारा ऊपर से नीचे तक निश्चित रूप से बहनी ही है। राजभाषा कार्यशाला हो या राजभाषा पखवाड़ा, सभी में आयुक्त महोदय श्री जे. ए. खान ने व्यक्तिगत रूचि दिखाई जो उनके हिंदी के प्रति प्रेम का ही प्रदर्शन है।

अपर आयुक्त महोदय श्री राजमोहन गौतम का योगदान राजभाषा के क्षेत्र में अभूतपूर्व है। राजभाषा अनुभाग द्वारा भेजे गये प्रत्येक प्रस्ताव का ना केवल उन्होंने अनुमोदन किया अपितु अपने रचनात्मक सुझावों के द्वारा इन्होंने राजभाषा के कार्य और कार्यक्रमों को और अधिक लोकप्रिय बनाने में सहायता की। प्रत्येक गतिविधि को स्वयं देखा एवं सर्वोत्तम करने का प्रयास किया।

जुलाई से लेकर सितंबर तक की अल्पावधि में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला, राजभाषा पखवाड़ा, सभी अनुभागों एवं मंडलों के राजभाषा निरीक्षण का कार्य भी कर लिया गया जो यह प्रदर्शित करता है कि सभी कार्मिक राजभाषा के प्रति सम्मान एवं सकारात्मक रवैया रखते है। राजभाषा पखवाड़ा के तहत आयोजित छः प्रतियोगिताओं में 140 के आसपास प्रतिभागियों का भाग लेना बेहत सुखद एवं अभूतपूर्व है। सभी मंडलों से बढ–चढ़कर नामांकन आये और श्री राहुल परमार, श्री आदेश जैन जैसे मंडल प्रभारियों ने स्वयं भी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपने साथी कार्मिकों का मनोबल बढ़ाया। कनिष्ठ अनुवादक श्री अविनाश कुमावत के आने से राजभाषा के कार्य को सुव्यवस्थित योजना के साथ गति भी प्राप्त हुई।

यह मेरा सौभाग्य है कि राजभाषा से संबंधित प्रकाशन के कार्य से मुझे आरंभ से ही जुड़ने का मौका मिला। परीवीक्षा काल में नासेन मुंबई में विभागीय पत्रिका 'वॉयेज' का संपादन किया तो अपने त्रिची कार्यकाल के दौरान 'कावेरी धारा' के प्रकाशन में सहयोगी रहा। वहां से अहमदाबाद आने पर सेवाकर आयुक्तालय की विभागीय हिंदी पत्रिका 'सेवाकर भारती' का संपादन किया और अहमदाबाद–3 आयुक्तालय की पत्रिका 'सरदार भारती' के प्रकाशन में भी परोक्ष योगदान दिया। तत्पश्चात इस आयुक्तालय में पदस्थापित होते ही 'कर्णावती दर्पण' के कार्य में लग गया जो आज आपके हाथ में है। राजभाषा की ऐसी सेवा का अवसर देने के लिये मैं अपने सभी वरिष्ठ अधिकारियों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

इस पत्रिका के लिये सहयोग प्रदान करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं एवं सुझावों द्वारा इस पत्रिका को एक बेहतरीन प्रकाशन बनाने में अपना योगदान दिया। आयुक्त श्री जे. ए. खान, अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम, संयुक्त आयुक्त श्री ज्ञानचंद जैन एवं अपने साथी अधिकारियों सर्वश्री प्रणेश गुप्ता, श्री आदेश जैन, श्री राहुल परमार एवं कनिष्ठ अनुवादक श्री अविनाश कुमावत का उनके सहयोग के लिये व्यक्तिशः आभार प्रकट करता हूँ।

अंत में, अपनी बात को विराम पुनः भारतेन्दु की पंक्तियों से ही करना चाहूंगा जो ऐसा लगता है जैसे उन्होने आज ही लिखी हो–

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पे निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन..!!

दिनेश कुमार जांगिड़, उपायुक्त

जीएसटी दिवस पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन

1 जुलाई 2017 को देश भर में कर प्रणाली के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। इसी दिन भारत में वस्तु एवं सेवा कर की नई कराधान व्यवस्था लागू की गई। इस मौके को यादगार बनाने के लिये देशभर में भव्य कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इसी क्रम में अहमदाबाद में भी केन्द्र एवं राज्य सरकार ने एक साथ मिलकर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी, उप मुख्यमंत्री श्री नितिन पटेल, गुजरात के वित्त राज्य मंत्री श्री रोहित पटेल, गुजरात सरकार के मुख्य सचिव श्री जे.एन. सिंह, अतिरिक्त मुख्य सचिव(वित्त) श्री अनिल मुकीम, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर जोन अहमदाबाद के मुख्य आयुक्त श्री अजय जैन, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अहमदाबाद उत्तर के आयुक्त श्री जे.ए. खान, गांधीनगर आयुक्त श्री एस के. सिंह, गुजरात जीएसटी आयुक्त श्री पी.डी. वाघेला आदि ने मंच साझा किया।

अपने स्वागत उद्‌बोधन में केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अहमदाबाद जोन के मुख्य आयुक्त श्री अजय जैन ने जीएसटी को देश के लिये सकारात्मक परिवर्तन बताते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डाला और विभाग द्वारा की गई तैयारियों से सबको अवगत करवाया।

मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्‌बोधन में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी ने कहा कि जीएसटी से देश की कर प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन आयेगा और यह कर प्रणाली हमें विश्व व्यवस्था के साथ कदम से कदम मिलाने में सहयोग करेगी। उन्होंने व्यापारी वर्ग से अपील करते हुए कहा कि देश के प्रत्येक नागरिक को इसमें सहयोग करना चाहिये ताकि भारत एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर सके।

माननीय मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी का स्वागत करते मुख्य आयुक्त श्री अजय जैन

मंच पर विराजमान आयुक्त श्री जे.ए.खान व अन्य अधिकारीगण

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य आयुक्त श्री अजय जैन

कार्यक्रम में शिरकत करते हुए आयुक्त श्री जे.ए.खान व अन्य अधिकारीगण

समारोह में उपस्थित मेहमान

राजभाषा पखवाडे पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा के.उ.शु. अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय द्वारा दिनांक 01 सितंबर 2017 से 15 सितंबर 2017 तक के पखवाड़े को राजभाषा पखवाड़े के रूप में मनाया गया और इस उपलक्ष पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–

निबंध प्रतियोगिता में उपस्थित अपर आयुक्त श्री राज मोहन गौतम व संचालन करते हुए श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

पखवाड़े के आरंभ में दिनांक 01 सित. 2017 को निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में निबंध लेखन हेतु चार शीर्षक दिये गये थे– 'आयुक्तालय में हिंदी के प्रयोग के बढ़ाने हेतु सुझाव', 'भारतीय अर्थव्यवस्था में जीएसटी की भूमिका', 'दैनिक जीवन में योग का महत्व' एवं 'भारत का अपने पड़ौसी देशों के साथ संबंध'। इनमें से किसी एक विषय पर प्रतिभागी को कम से कम 300 शब्दों में निबंध लिखना वांछित था। कुल 18 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक सहायक आयुक्त श्री संजय श्रीवास्तव थे और परिणाम इस प्रकार रहा–

निबंध लेखन करते हुए प्रतिभागी

प्रथम पुरस्कार – नीरज कुमार, निरीक्षक, मंडल 6

द्वितीय पुरस्कार – अंकित कुमार, निरीक्षक, मंडल 7

तृतीय पुरस्कार – राजबक्श सिंह, निरीक्षक, मंडल 4

श्रुतलेखन प्रतियोगिता–

श्रुत लेखन प्रतियोगिता का संचालन करते हुए
श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त व श्री अविनाश कुमावत, कनिष्ठ अनुवादक

दिनांक 4 सित. 2017 को श्रुतलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में राजभाषा उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने एक परिच्छेद बोला जिसे सुनकर सभी ने लिखा। इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा–

श्रुत लेखन करते हुए प्रतिभागी

प्रथम पुरस्कार – राजेश कुमार सोनी, निरीक्षक, मंडल 5

द्वितीय पुरस्कार – रणधीर कुमार, का. सहायक, मुख्यालय

तृतीय पुरस्कार – अंकित कुमार, निरीक्षक, मंडल 7

आशु-भाषण प्रतियोगिता-

दिनांक 6 सित. 2017 को आशु–भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न रूचिकर विषयों की पर्चियां बनाकर एक डब्बे में रखी गई थी जिसमें प्रत्येक प्रतिभागी को एक विषय की पर्ची पांच मिनट पहले निकालनी थी और प्राप्त विषय पर अधिकतम तीन मिनट के लिये अपने विचार व्यक्त करने थे। कुछ विषय इस प्रकार थे– जीवन में हास्य विनोद का महत्व, क्या हमें विवाह करना चाहिये, जीवन में कितना झूठ बोलना चाहिये, हिंदी पखवाड़े की उपयोगिता, बायोमैट्रिक उपस्थिति प्रणाली की उपयोगिता, इंटरनेट का बच्चों पर प्रभाव, जीवन और संगीत, वर्तमान फिल्मों का समाज पर असर आदि। इस प्रतियोगिता के निर्णायक अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम, उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ एवं सहायक आयुक्त श्री संजव श्रीवास्तव थे और परिणाम इस प्रकार रहा–

आशु-भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक अपर आयुक्त श्री राज मोहन गौतम, श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त व श्री संजय श्रीवास्तव, सहायक आयुक्त

आशु-भाषण सुनते हुए उपस्थित प्रतिभागीगण

प्रथम पुरस्कार – सुश्री नेहा, निरीक्षक, मुख्यालय

द्वितीय पुरस्कार – बालकृष्ण तिवारी, अधीक्षक, मुख्यालय

तृतीय पुरस्कार – अंकित कुमार, निरीक्षक, मंडल 7

कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता-

दिनांक 8 सित 2017 को कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी को एक परिच्छेद यूनीकोड में टंकण करने के लिये दिया गया जिसकी समय सीमा 10 मिनट रखी गयी थी। इस प्रतियोगिता का संचालन कनिष्ठ अनुवादक श्री अविनाश कुमावत ने किया जिसका परिणाम इस प्रकार रहा–

टंकण प्रतियोगिता का संचालन करते हुए श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त व श्री अविनाश कुमावत, कनिष्ठ अनुवादक

प्रथम पुरस्कार – राजेश जांगिड़, कर सहायक, मुख्यालय

द्वितीय पुरस्कार – जितेन्द्र बिंदल, निरीक्षक, मंडल 3

तृतीय पुरस्कार – धीरज कुमार, कर सहायक, मुख्यालय

टंकण प्रतियोगिता में कम्प्यूटर पर टंकण करते हुए प्रतिभागी

वाद-विवाद प्रतियोगिता-

दिनांक 11 सितंबर 2017 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का विषय था– 'भारत का विकास हिंदी के विकास में ही निहित है।' इस विषय के पक्ष एवं विपक्ष में प्रतिभागियों को अपने विचार चार मिनट के लिये प्रस्तुत करने थे। इस प्रतियोगिता के निर्णायक अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम, संयुक्त आयुक्त श्री ज्ञानचंद जैन एवं उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ रहे। इसका परिणाम इस प्रकार है–

प्रथम पुरस्कार – चित्रसेन गर्ग, कर सहायक, मंडल 6
द्वितीय पुरस्कार – नीरज कुमार, निरीक्षक, मंडल 6
तृतीय पुरस्कार – बालकृष्ण तिवारी, अधीक्षक, मुख्यालय

वादविवाद प्रतियोगिता के निर्णायक अपर आयुक्त श्री राज मोहन गौतम, श्री ज्ञानचंद जैन, संयुक्त आयुक्त व श्री दिनेश कुमार जांगिड उपायुक्त तथा विषय के पक्ष में अपने विचार रखते हुए नेहा, निरीक्षक

वादविवाद प्रतियोगिता के प्रतिभागियों के विचार सुनते हुए अधिकारी/कर्मचारीगण

हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिता-

दिनांक 12 सितबंर 2017 को हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का 'कौन बनेगा करोड़पति' की तर्ज पर आयोजन किया गया जिसमें प्रोजेक्टर स्क्रीन पर बहुविकल्पनात्मक प्रश्न प्रदर्शित किये गये जिसमें से प्रत्येक टीम को किसी एक विकल्प का चयन करना था। इस प्रतियोगिता में प्रत्येक मंडल से चार चार प्रतिभागियों की सात टीमों सहित मुख्यालय की एक टीम सहित कुल 8 टीमों में कुल 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का संचालन उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने किया जिसमें आयुक्त श्री जे.ए. खान, अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम, संयुक्त आयुक्त श्री ज्ञानचंद जैन सहित कई मंडल प्रमुख भी उपस्थित रहे। आयुक्त महोदय ने राजभाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये इसे सर्वाधिक सफल प्रतियोगिता बताया। इस प्रतियोगिता में मंडल 3 की टीम विजेता रही जिसके प्रतिभागी थे– अजय कुमार शर्मा, आलोक कुमार, हरलाल महरिया निरीक्षक एवं जितेन्द्र बिंदल (सभी निरीक्षक)

प्रश्नमंच प्रतियोगिता में उपस्थित आयुक्त महोदय श्री जे.ए.खान एवं अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम तथा प्रतियोगिता के नियम बताते हुए श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

प्रश्नमंच प्रतियोगिता में मुख्यालय एवं मंडल कार्यालय से शामिल अधिकारी/कर्मचारीगण

प्रश्नमंच प्रतियोगिता का संचालन करते हुए श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

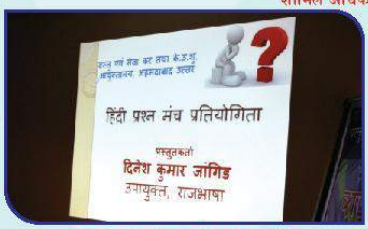

प्रश्नमंच प्रतियोगिता की प्रोजेक्टर स्क्रीन

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह

दिनांक 14 सितंबर 2017 को हिंदी दिवस के उपलक्ष में राजभाषा पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया जिसमें आयुक्त महोदय ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए राजभाषा के प्रयोग को और अधिक बढाने एवं राजभाषा विभाग द्वारा दिये गये लक्ष्यों की पूर्ति करने का आव्हान किया। उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने राजभाषा पखवाड़े का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें बताया गया कि इस पखवाड़े के दौरान आयोजित कुल छः प्रतियोगिताओं में सभी मंडलों एवं अनुभागों ने उत्साह से भाग लिया। अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम ने राजभाषा पखवाड़े के सफल आयोजन के लिये सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। पूरे पखवाड़े के लिये सुनिश्चित योजना बनाकर उसे सफलता से कार्यान्वित करने के लिये आयुक्त महोदय एवं अपर आयुक्त महोदय ने उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ एवं कनिष्ठ अनुवादक श्री अविनाश कुमावत को बधाई एवं धन्यवाद प्रेषित किया।

समापन समारोह में सभी विजेताओं को आयुक्त महोदय, अपर आयुक्त महोदय एवं संयुक्त आयुक्त महोदय द्वारा प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया। साथ ही विजेताओं को नकद पुरस्कार भी प्रदान किये गये।

हिंदी दिवस एवं राजभाषा पखवाड़ा के समापन व पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर उपस्थित आयुक्त महोदय श्री जे.ए.खान, अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम एवं श्री ज्ञानचंद जैन, संयुक्त आयुक्त तथा संचालन करते हुए श्री दिनेश कुमार जांगिड़, उपायुक्त

राजभाषा पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए श्री दिनेश कुमार जांगिड़, उपायुक्त को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए आयुक्त महोदय श्री जे.ए.खान

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए श्री ज्ञानचंद जैन, संयुक्त आयुक्त

एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन-

राजभाषा कार्यशाला में उपस्थित आयुक्त महोदय श्री जे.ए.ख़ान, अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम एवं श्री ज्ञानचंद जैन, संयुक्त आयुक्त तथा संचालन करते हुए श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

राजभाषा कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए आयुक्त महोदय श्री जे.ए.ख़ान

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय के कार्मिकों को राजभाषा से संबंधित विभिन्न जानकारियां देने एवं राजभाषा में कामकाज हेतु प्रोत्साहित करने के लिये आयुक्तालय के सभागार कक्ष में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन दिनांक 10.08.2017 को प्रातः 10.15 से सांय 5.30 बजे के मध्य किया गया।

कार्यशाला का आयोजन चार सत्रों में किया गया जो इस प्रकार थे–

प्रथम सत्र – राजभाषा से संबंधित विभिन्न संवैधानिक प्रावधान एवं अधिनियम

द्वितीय सत्र – राजभाषा की तिमाही रिपार्ट

तृतीय सत्र – कार्यालयों में राजभाषा की विभिन्न पंजीकाओं एवं रोस्टर का रखरखाव

चतुर्थ सत्र – राजभाषा से संबंधित विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं

प्रथम एवं द्वितीय सत्र भोजन अवकाश से पहले तथा तृतीय एवं चतुर्थ सत्र भोजन अवकाश के पश्चात रखे गये। इन सत्रों में राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976, राष्ट्रपतिजी का संकल्प आदि पर विस्तृत चर्चा की गयी। साथ ही राजभाषा की तिमाही रिपोर्ट के भाग–1 एवं भाग–2 को भरने से संबधित यथोचित दिशा–निर्देश भी सभी प्रतिभागियों को दिये गये। कार्यालयों में रखे जाने वाली पत्र आवक–जावक पंजीकाओं के रखरखाव एवं मुख्यालय पर राजभाषा के लिये रखे जाने वाले रोस्टर पर भी चर्चा की गई। इसके साथ ही राजभाषा में कामकाज के लिये प्रोत्साहित करने वाली विभिन्न पुरस्कार योजनाओं की भी विस्तृत जानकारी अंतिम सत्र में दी गई। चारों सत्रों को आयुक्तालय के राजभाषा उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने संबोधित किया।

राजभाषा कार्यशाला में प्रोजेक्टर पर जानकारी देते हुए श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

कार्यशाला में आयोजित राजभाषा प्रश्नावली में भाग लेते हुए मुख्यालय तथा मंडल कार्यालयों के अधिकारी / कर्मचारीगण

चारों सत्रों की समाप्ति के उपरांत इन सत्रों में दी गई जानकारी को आधार बनाकर एक राजभाषा प्रश्नावली का भी आयोजन किया गया जिसमें सभी प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं बेहतरीन प्रदर्शन किया। इस कार्यशाला के संयोजक आयुक्तालय के अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम एवं सह संयोजक राजभाषा उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ थे। कार्यशाला में अहमदाबाद उत्तर के सभी सात मंडलों से मंडल प्रमुख सहित तीन–तीन प्रतिभागियों एवं मुख्यालय के प्रत्येक अनुभाग से एक–एक प्रतिभागी सहित कुल चालीस से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला के समापन सत्र को आयुक्त श्री जावेद अख्तर खान ने संबोधित किया तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किये।

बस बॉडी निर्माताओं के लिये विशेष सेमिनार-

अहमदाबाद शहर के बस एवं मोटर बॉडी निर्माताओं की जीएसटी से संबंधित समस्याओं का समाधान करने के लिये आयुक्तालय के सभागार कक्ष में दिनांक 10 अगस्त 2017 को बस एवं मोटर बॉडी निर्माताओं के लिये एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार को अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम, संयुक्त आयुक्त श्री ज्ञानचंद जैन एवं उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने संबोधित किया। इस अवसर पर विशेषज्ञ के रूप में सी.ए. श्री प्रवीण ढंढारिया एवं अधीक्षक श्री बी एल काबरा ने सेमिनार में आये हुए प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान किया। बस बॉडी निर्माताओं का प्रतिनिधित्व एमबी मोटर्स के श्री बी एस शर्मा, सुरेन्द्र मोटर बॉडी बिल्डर्स के श्री सुरेन्द्र शर्मा एवं नरोड़ा के सुरेश शर्मा ने किया।

बस बॉडी सेमिनार में उपस्थित अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम श्री ज्ञानचंद जैन, संयुक्त आयुक्त एवं श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

बस बॉडी सेमिनार में उपस्थित बस बॉडी निर्माताओं के प्रतिनिधि

लीजिंग क्षेत्र हेतु विशेष सेमिनार-

लीजिंग/पट्टा क्षेत्र हेतु जीएसटी पर परिचर्चा के लिये उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने राज्य कर अधिकारियों के साथ मिलकर दिनांक 28 अगस्त 2017 को एक विशेष सेमिनार को संबोधित किया। इसमें लीज की अवधारणा, लीज के प्रकार एवं इनके उदाहरण के साथ–साथ जीएसटी का लीज क्षेत्र पर प्रभाव के बारे में भी चर्चा की गई। इस सेमिनार का आयोजन गुजरात राज्य कर प्रशिक्षण अकादमी, पालड़ी में किया गया जिसमें गुजरात राज्य के अनेक अधिकारियों ने भी भाग लिया।

आजादी के बाद देश में कर सुधार की दिशा में जीएसटी एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी कदम है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ कदमताल के लिये एक जरूरी कदम है। इसी के मद्देनगर सभी जगह सेमीनारों का आयोजन हो रहा है।

लीजिंग क्षेत्र हेतु विशेष सेमिनार को संबोधित करते हुए श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

लीजिंग क्षेत्र हेतु विशेष सेमिनार में उपस्थित केन्द्र/राज्य कर के अधिकारीगण

श्री मीणा को दी भावभीनी विदाई

आयुक्तालय में कार्यरत मंडल पांच के सहायक आयुक्त श्री आर डी मीणा इस वर्ष जुलाई माह में अपनी पैंतीस वर्षों की राजकीय सेवा के पश्चात सेवानिवृत हुए। श्री मीणा सन 1982 में विभाग में एक निरीक्षक के रूप में पदस्थापित हुए और सन 2014 में उनकी ग्रूप ए सेवा में सहायक आयुक्त के रूप में पदोन्नति हुई। श्री मीणा अपने सेवाकाल में अहमदाबाद, भावनगर, सूरत, मुंद्रा आदि स्थानों पर अपनी सेवायें दे चुकें हैं। इस अवसर पर आयोजित विदाई समारोह में अहमदाबाद उत्तर के आयुक्त श्री जे. ए. खान, गांधीनगर आयुक्त श्री एस. के. सिंह सहित सभी अधिकारियों ने श्री मीणा को स्वस्थ दीर्घायु की शुभकामनायें प्रेषित की। श्री मीणा को आुयक्तालय की तरफ से सॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर विदा किया गया।

श्री आर. डी. मीणा को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए
आयुक्त महोदय श्री जे. ए. ख्रान

विदाई समारोह कार्यक्रम का संचालन करते हुए
श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

श्री दर्जी हुए सेवानिवृत्त-

आयुक्तालय में कार्यरत हेड हवलदार श्री गोपाल दर्जी (सोलंकी) अपनी तीन दशक से अधिक राजकीय सेवा के पश्चात सेवानिवृत हुए। इस अवसर पर आयुक्तालय के सभागार कक्ष में एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम एवं उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने भी शिरकत की। संचालन उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने किया। अपर आयुक्त महोदय ने सॉल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर श्री दर्जी की सेवाओं का सम्मान किया।

इस अवसर पर हवलदार ऐसोशियेसन के विभिन्न पदाधिकारीगण एवं अन्य आयुक्तालयों के कर्मचारी भी उपस्थित रहे और श्रीदर्जी को शुभकामनायें प्रेषित की।

श्री दर्जी को सोल और पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए
श्री दिनेश कुमार जांगिड, उपायुक्त

श्री दर्जी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए
साथी कार्मिकगण

आयुक्तालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 52वीं तिमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 26 सितंबर 2017 को अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 52वीं बैठक का आयोजन आयुक्त श्री जे. ए. खान की अध्यक्षता में किया गया।

बैठक में राजभाषा उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ ने पिछली बैठक के कार्यवृत्त को पढकर सुनाया तथा अनुवर्ती कार्रवाई की जानकारी प्रदान की। बैठक में जून 2017 को समाप्त तिमाही अवधि की हिंदी प्रगति रिपोर्ट की विभिन्न मदों पर विस्तार से चर्चा की गई। अपने अध्यक्षीय संबोधन में आयुक्त श्री जे. ए. खान ने राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के निर्देश दिये तथा सभी रिपोर्ट नियत समय पर यथोचित भेजने के निर्देश दिये। साथ ही उन्होंने कहा कि जब भी किसी मंडल या अनुभाग का वार्षिक निरीक्षण किया जाये तो उसमें हिंदी के कामकाज पर भी टिप्पणी की जानी चाहिये। आयुक्त महोदय ने राजभाषा उपायुक्त को निर्देश दिया कि आने वाले एक दो महिने में ही राजभाषा से संबंधित तकनीकी संगोष्ठी का भी आयोजन किया जाये।

बैठक में अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम, संयुक्त आयुक्त श्री ज्ञानचंद जैन सहित सभी मंडलों एवं अनुभागों के प्रभारी उपस्थित थे।

रा. का. स. की 52 वीं तिमाही बैठक में उपस्थित आयुक्त महोदय श्री जे. ए. खान एवं वरिष्ठ अधिकारीगण

समिति को बैठक संबंधी जानकारी देते हुए उपायुक्त राजभाषा श्री दिनेश कुमार जांगिड

आयुक्तालय में हिंदी के प्रयोग के संबंध में प्रगति पर चर्चा करते हुए अधिकारीगण

बैठक में उपस्थित मुख्यालय के अनुभागों एवं मंडल कार्यालयों के प्रभारी

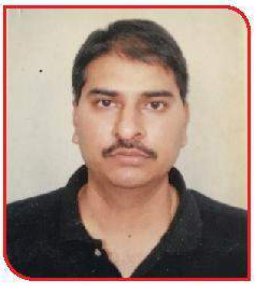

नरेन्द्र गोखरू, अधीक्षक

जैसा दर्द हो वैसा मंजर होता है
मौसम तो इंसान के अंदर होता है।

अजीज एजाज

तीर कब दुश्मन चलायेगा हमें मालूम था
इसलिये तो दोस्ती से दुश्मनी अच्छी लगी।

कमर जलालाबादी

बागवां ने आग दी जब आशियाने को मिरे
जिनपे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे

साकिब लखनवी

जिस तरह हंस रहा हूं मैं पी पी के गर्म अश्क
यूं दूसरा हंसे तो कलेजा निकल पड़े

कैफी आजमी

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियां जलाने में

बशीर बद्र

अंधेरे मांगने आये थे रोशनी की भीख
हम अपना घर न जलाते तो और क्या करते

नजीर बनारसी

एक तकरीर सिर्फ काफी है
क्या जरूरत है दियासलाई की।

विजय वाते

आग अपने ही लगा देते है
गैर तो सिर्फ हवा देते हैं।

मुहम्मद अलवी

आग लेकर हाथ में पगले जलाता है किसे
जब न यह बस्ती रहेगी तू कहां रह जायेगा।

नीरज

कुछ चुनिंदा शे'र

उग रहा है दरो दीवार पर सब्जा गालिब
हम खिजां में हैं और घर में बहार आयी है।

गालिब

उनके देखे से जो आ जाती है मुंह पर रौनक
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है

गालिब

उम्र सारी तो कटी इश्के बुतां में मोमिन
आखरी वक्त में क्या खाक मुसलमां होंगे

मोमिन

मैं भी खुश नहीं वफा करके
तुमने अच्छा किया निबाह न की

मोमिन

देख छोटों को अल्लाह बड़ाई देता है
आसमां आंख के तिल में दिखाई देता है

जौक

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम
वो कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता

अकबर इलाहाबादी

उठे, उठकर चले, चल कर रूके, रूककर कहा होगा
मैं क्यों जाऊँ, बहुत हैं उन की हालत देखने वाले

मुजतर खैराबादी

गरज की काट दिये जिंदगी के दिन ऐ दोस्त
वो तेरी याद में हो या तुझे भुलाने में

फिराक गोरखपुरी

लुत्फ़े दोज़ख भी लुत्फ़े जन्नत भी
हाय क्या चीज है मुहब्बत भी

खुमार बाराबंकवी

गालिब–ए–खस्ता के बगैर कौनसे काम बंद हैं
रोइये जार जार क्या, कीजिये हाय हाय क्यूं

गालिब

मेहमान का पन्ना

इकराम राजस्थानी

गज़ल

उसका वजूद, जिस्म के अंदर दिखाई दे।
ये सोचे तो इंसान कलन्दर दिखाई दे।
इन बादलों के पीछे कोई चांद नहीं है,
जब ये छंटे तो धूप का मंजर दिखाई दे।
अब ढूंढ रहा हूँ मैं किसी ऐसे शख्स को,
कांधे पे जिसके अपना ही एक सर दिखाई दे।
वो आदमी नहीं है फरिश्ता कहो उसे,
इस दौर में उसूलों का रहबर दिखाई दे।
ऐ मेरे दोस्त रोक ले, अब मत बढ़ा इसे,
मुझको तो तेरा हाथ भी खंजर दिखाई दे।
मेहनतकशों के पास कोई आइना नहीं,
बूंदों में पसीनों की, मुकद्दर दिखाई दें।
लाज़िम है अपनी जान को छिपकर बचाइये,
जब भी बचाने वालों का लश्कर दिखाई दे।
इतना ही है, ग़रूर तो फिर ये भी कर दिखा,
साया भी तेरे क़द के बराबर दिखाई दे।
ग़ालिब का रंग, मीर का अहसास पैदा हो,
इकराम भी फिर एक सुख़नवर दिखाई दे।

परिचय

'कर्णावती दर्पण' की परंपरा में एक नवाचार के तहत इस अंक से हमने एक मेहमान का पन्ना नाम का नया स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया है जिसमें देश के किसी ख्यातनाम साहित्यकार की रचनाओं का समावेश किया जायेगा।

इस अंक के हमारे मेहमान हैं श्री इकराम राजस्थानी। 8 जुलाई 1946 को जन्में श्री इकराम राजस्थानी का नाम राजस्थान में हरेक बच्चे एवं जवान की जुबान पर है। आप हिंदी, उर्दू एवं राजस्थानी पर सामान अधिकार रखते हैं आकाशवाणी के मान्यता प्राप्त गायक, गीतकार, समाचार वाचक, लोक गायक एवं कमेंटेटर रहें हैं। आप जयपुर आकाशवाणी केन्द्र के निदेशक भी रहें हैं। एचएमवी, यूकी, वैस्टन जैसी संगीत कंपनियों में हजारों गीतों के कैसेट्स एवं विविध भारती से हजारों नाटक, गीत, झलकियां एवं कहानियां प्रसारित हो चुकी हैं। अपने हिंदी, राजस्थानी फिल्मों में अभिनय, गीत लेखन, गायन एवं संवाद लेखन का कार्य भी किया है। आप राष्ट्रीय स्तर के लोकप्रिय मंच संचालक, कवि, गीतकार एवं साहित्यकार हैं।

तारां छाई रात, पल्लो लटके, गीतां री रमझोल, शबदां री सीख, खुले पंख, पैगंबरों की कथाएं, शर्म आती है मगर, गाता जाये बंजारा, दर्द के रंग, सुनो पेड़ की गाथा, एक है अपना हिंदुस्तान, अक्षर देते सीख, इस सदी का आखिरी पन्ना, लोकप्रिय नेता कैसे, सौ अशर्फियां आदि आपकी प्रसिद्ध प्रकाशित पुस्तकें हैं। अपने टैगोर की 'गीतांजलि' एवं हरिवंश राय बच्चन की 'मधुशाला' का राजस्थानी रूपांरतरण भी किया है। 'कुरान शरीफ' का राजस्थानी एवं हिंदी में भावानुवाद करने वाले आप विश्व के प्रथम कवि माने जाते हैं।

आप 'लोकमान' उपाधि से विभूषित हैं, जिन्हें लासा कौल, राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, महाकवि बिहारी पुरस्कार, राष्ट्र रत्न, तुलसी रत्न, वाणी रत्न जैसे अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं।

अपनी ही राह गुजारों से कटे हुए हैं लोग।
एक दर्द की तलाश में बंटे हुए हैं लोग।
इन दामनों को सीने की बातें फुजूल है,
चिथड़ों की तरह आज कल फटे हुए हैं लोग,
बिच्छू ने जब भी मारा है तो डंक ही मारा,
कुछ ऐसे ही उसूलों पे डटे हुए हैं लोग।
तू महल बनाने की लिये मत इसे गिरा,
शायद इसी दीवार से सटे हुए हैं लोग,
ये वो ही बोलते हैं जो कुछ आपने चाहा,
बस एक ही पहाड़ा ये रटे हुए हैं लोग।

इस झील में है कब से ये ठहरा हुआ पानी,
आवाज़ नहीं सुनता क्या बहरा हुआ पानी।
आदम का खून तो सियाह कब का हो गया,
फिर किसके खून से ये सुनहरा हुआ पानी।
इक शोख़कली रात को नहाकर चली गई,
कब से चमक रहा है छरहरा हुआ पानी।
उस पार मेरे यार ने डेरा लगा लिया,
अब कैसे जाउं तैर के, पहरा हुआ पानी।
मैंने तो संमाया था, समंदर ही मसझ के,
आंखों में मेरी आके, एक, कतरा हुआ पानी।
अनमोल है वो पानी जो नज़रों में चढ गया,
बेमोल बिका करता है उतरा हुआ पानी।

काली घटाएं देख के इंसान डर गया,
सावन के बादलों में कोई आग भर गया।
कैसी चली है आज ये नफरत की आंधियां,
जिसकी चपेट में मेरा सारा शहर गया।
दीवारें चुप, उदास छतें सूनी चौखटें,
पहचान ही ना पाया जो मैं अपने घर गया।
इस दौर में ये सबसे बड़ा हादसा हुआ,
इंसान आज खुद की नज़र से उतर गया।
उस शख्स के मज़ार पर रोटी का ढेर है,
जो शख्स के मज़ार पूरी जिंदगी फ़ाकों से मर गया।
खुश होते थे इंसान को इंसान देखकर,
कोई बताये दुनियां का वो रंग किधर गया।
सहमी हुई ग़ज़ल है, रूबाई उदास है,
शेरो सुख़न का सारा नशेमन बिखर गया ।

दिनेश कुमार जांगिड़,
उपायुक्त

जगत की यही है प्यारे रीत

दादी हमको यही थी सुनाती,
गरज गधे को बाप बनाती
मंत्री–संत्री, भाई–भाभी
करते सब मतलब से प्रीत...!!!

नहीं कदर जब तक जिंदा हैं
जीवन भर करते निंदा हैं
मरने पर तो स्वर्ग भेजते
फिर उसके गाते हैं गीत...!!!

किसको किसके काम है आना
अपना रस्ता खुद ही बनाना
मन के हारे हार है तेरी
मन के जीते तेरी जीत...!!!

राम कृष्ण बुद्ध हो या गांधी
प्रेम की डोरी जग से बांधी
'सारंग' जग उसका ही होता
जिसने की हो सबसे प्रीत...!!!

प्यारा बचपन याद है आता !

खाना पीना उठना सोना
ना कुछ पाना ना कुछ खोना
इन बातों से नहीं था मतलब,
मन अब भी वहीं दौड़ा जाता!

चुपके से मीठा खा लेना
कहीं कभी कुछ भी गा लेना
पेड़ों से वो बातें करना,
कौन कहां भूल है पाता

दादी की गोदी में सोना
अपनी ही गलती पर रोना
नानी के घर की यादों से,
मन मस्ती से भर है जाता!

यारों के संग करते मस्ती
सब चीजें लगती थी सस्ती
छोटी छोटी खुशियां भी,
कौन अब है खरीद पाता!

महंगे थे जीवन के वो पल
जग सारा लगता था निश्छल
'सारंग' इस बचपन को जीने,
विष्णु भी कान्हा बन जाता!

झलकियां

नेहा, निरीक्षक

चाहत

गुज़र रही थी उस भीड़ से, अपने ही विचारों में
सोच रही थी कितने चेहरे सच्चे हैं
खुद से इन हज़ारों में
कोई अपने काम से यूँ परेशान है
तो किसी को अपनी काबिलियत पर यूँ अभिमान है
कोई अपनी चुनी हुई राह से जूझ रहा है
और कोई अब तक अपनी मंजिल ढूँढ रहा है
कभी सोचा है क्यूँ तुम अपने आप को
इतना पीछे पाते हो
क्यूँ जहाँ भीड़ होती है तुम वहीं जाते हो
सोचना जरा इस बात पर
जो बहुत कम लोगों को समझ आती है
कि तेज बहाव के साथ तो सिर्फ
मरी हुई मछलियाँ जाती हैं
यूँ तो हर कोई कहता है कि वो
काम करो जिसमें मजा आये
पर ये नहीं बताता कि उस बहाव से उल्टा जाके
अपनी मंजिल को कैसे पाए
तो मतलब ये बात सिर्फ खुद में छुपी है
कुछ पाने की चाह अब भी तुझमें रूकी है
पर तू रूका रहेगा वहां जब तक
तुझपे 'तेरी दुनिया' का जोर है
फिर बाहर निकल तू उस दुनिया से और बता दे
इस जहां को कि तू कोई और है
मैं भी ढूंढती रही अपने जवाबों को सवालों में
पर जब सोचा गौर से, मिला वो तो
बचपन की किताबों में
कि जब दो और तीन पाँच होता है
तो फिर एक और चार भी कैसे पाँच होता है
समझो ज़रा इस किस्से को वो खुद में ही तुम्हें
कितनी बातें कह गया
अरे गणित तो सिखा दिया हमें दुनिया ने, बस
ज़िन्दगी सिखाना रह गया
तो बस यही बात तुम्हें दुनिया को बतानी है
कि तुम्हारी ज़िन्दगी उनकी नहीं तुम्हारी कहानी है
तो अब से तुम वो करोगे जिससे तुम खुशी पाते हो
फिर फर्क नहीं पड़ता तुम दो और तीन या एक और
चार ले आते हो
तो फिर छोड़ो अंकों की तुम दुनिया को अपना गणित
सिखा दो
बस जोड़ दो अपनी मेहनत को और इस जहां को
पाँच बना कर दिखा दो ...

वक्त

क्या तुझे आज भी लगता है कि तुझसे तेरा खुदा खफ़ा है
खोयी है तेरी मंजिलें और तुझसे वक्त बेवफा है
कब वो आखिरी दिन था जब तूने मुश्किलों को नहीं
दुआओं को गिना था
जब अंधेरे थे रास्ते और मुश्किल जीना था
हम सबकी बस यही तो खता है
अंजाने है हम खुद से जबकि हमें सब पता है
हर कोई यह सिर्फ इस बात पर क्यों रोता है
कि हमेशा बुरा मेरे साथ ही क्यों होता है
क्यूँ हारे तू ज़िन्दगी से, जब तेरा खुदा तेरे साथ है
क्यों न समझे तू ये तो सिर्फ नज़रियों की बात है
सोचा है कभी कुछ लोग मुश्किलों में भी खुश कैसे रहते हैं
क्यूंकि वो वक्त को नहीं सिर्फ पलों को बुरा कहते हैं
तो याद रखना कि जब भी तेरी जिन्दगी में किसी बात की
फ़िक्र हो
तब मुश्किलों से पहले तेरी बातों में दुआओं का ज़िक्र हो
तब जाके इस बात को समझ पायेगा कि
बुरा हो या अच्छा ये पल भी बीत जाएगा

प्रणेश गुप्ता
उपायुक्त

मेरा एक कहना मानोगी ...
जब भी तुम,
अपनी पूजा शुरू करो,
उससे कुछ क्षण पहले,
यह कोशिश करना ...
उससे कुछ क्षण पहले,
यह कोशिश करना ...
अपनी इन सुन्दर आँखों पर,
पलकें ढांप कर,
चिर शांति में विलीन होना ...
और फिर याद करना उसे,
जिसे तुम बहुत प्यार करती हो।

तू और मैं
तुम हो,
तो मैं हूँ
तुम नहीं हो,
तो मैं भी नहीं हूँ
लेकिन अगर,
तुम हो भी
और नहीं भी,
तो भी मैं हूँ
एक उजली–सी खामोश,
सुबह के लिये,
ढलती शाम के लिये,
जागती रात के लिए,
तड़पती आह के लिए ...

संजय कुमार श्रीवास्तव
सहायक आयुक्त

जीवन रूपी नाव की विविधता भरी यात्रा में –
कुछ लोग चढे कुछ उतर गए।
कुछ लोग मिले कुछ बिछड़ गए।
कुछ बिछड़ गए पर साथ रहे।
कुछ निकल चलें कुछ ठहर गए।
कुछ लोग सधे कुछ बिखर गए।
कुछ लोग गिरे कुछ संभल गए।
कुछ गिर कर भी संभल गए।
कुछ लोग लड़े कुछ खेत रहे।
कुछ हँस–हँस कर संघर्षों को झेल रहे।
कुछ यूँ ही जीवन को कोस रहे।
कुछ यौवन में है खेल रहे।
कुछ यौवन से ही खेल रहे।
कुछ यौवन में ही खेत रहे।
कुछ मोक्ष प्राप्ति को तरस रहे।
कुछ साथ रहे पर अलग चले।
कुछ अलग चले पर साथ रहे।
कुछ लोग चढ़े कुछ उतर गए।
कुछ लोग मिले कुछ बिछड़ गए।
कुछ बिछड़ गए पर साथ रहे।

राजेश जांगिड़, कर सहायक

आज का युवा

निःशब्द हूँ
विश्व के अचंभों से मैं स्तब्ध हूँ
दोहरी मान्यताओं से मैं त्रस्त हूँ
फिर भी जी रहा हूँ मैं।
क्योंकि !!

आज का युवा हूँ मैं।
विडम्बनाओं से घिरा हूँ मैं।
अराजकताओं में पला हूँ मैं।
आज का युवा हूँ मैं ।

अतृप्त है मन मेरा,
अदृश्य हुआ है चैन मेरा
विक्षप्त भी है मन मेरा
फिर भी जी रहा हूँ मैं।
आज का युवा हूँ मैं।

विश्व में अपार है
फैला भ्रष्टाचार है
न कोई सुविचार है
कोई न शर्मसार है
पर फिर भी देखो मस्त हूँ
क्योंकि आज का युवा हूँ मैं।

हर ओर हाहाकार है
न आर है न पार है
हर नाव बीच धार है
पतवार सब के हाथ है
खेवैया बेहिसाब है
न डर है न लिहाज है ।

हर नाव की दिशा है एक
बटोर ले बटोर ले।
बस इक यही हो धर्म तेरा
बस इक यही हो कर्म तेरा ।

कुंठाओं से मैं ग्रस्त हूँ
फिर भी देखो तटस्थ हूँ
क्योंकि आज का युवा हूँ मैं।

विडम्बनाओं से घिरा हूँ मैं
अराजकताओं में पला हूँ मैं
आज का युवा हूँ मैं
हाँ, आज का युवा हूँ मैं।

सुमित कुमार, कार्यकारी सहायक

रोजगार

कितना प्यारा देखो यह मेरा रोजगार है।
मिलती तंख्वाह हजारों में खुशियों की भरमार है।
बीबी संग दो बच्चे छोटा-सा परिवार है।
कितना प्यारा देखो यह मेरा रोजगार है।

कुछ समय बाद

अमूल्य रिश्ते, अच्छे दोस्त अब तो सब बेकार है।
पैसे कमाने की धुन बस मुझ पर सवार है।
हर साल बढ़ा वेतन पाने को हम तो तैयार है।
कितना प्यारा देखो यह मेरा रोजगार है।

कुछ और समय बाद

जिंदगी की खुशियों के रथ पर सवार है।
देखो मेरे पास कोठी, बंगला, कार है।
जिसमें जाना घूमने हर हफ्ते बाज़ार है।
कितना प्यारा देखो यह मेरा रोजगार है।

अंत में

खोया बचपन, गयी जवानी, बुढ़ापे से लाचार है।
बेटा और बहू दफ्तर जाए बंद घर के यह द्वार है।
रक्तचाप, शुगर और दुर्बलता का प्रहार है।
लगता है सब कुछ पाकर भी जीवन यह बेकार है
।

गज़लें

आर. के. चौहान, अधीक्षक

जिंदगी के सफर में,
मिला हसीन धोखा
हम प्यार समझते रहे
क्या सुनाउँ दास्तां
वफ़ा ना कर्दा को,
हम यार समझते रहे
कत्ल हुए थे निगाहें शौक
और गुल अज़ार पर हम
मगर पहना था निकाब अंदलीब ने
हम निगार समझते रहे
किया था वादा उन्होंने,
साथ न छोड़ेंगे कभी
मुँह जबानी की बात थी वो
हम करार समझते रहे ...

वफ़ा ना कर्दा - बे वफ़ा
निगाहें शौक - प्यारभरी नजर
गुल अज़ार - फूल जैसी सुन्दर
निगार - माशूक
करार - वचन, प्रतिग्या

मैंने तो सजा रखे हैं,
हर रास्ते फूलों से
पता नहीं, तुम किस,
गुजर गाह से आओगे,
मंजिल मिली, मुराद मिली,
मिला मुद्दा जीने का
सता नहीं माही,
कब जल्वागाह पे आओगे
नजर नवाज नजरों में,
अब जी नहीं लगता
बता सही साकी,
कब जियारत गाह पे आओगे
वाजिब नहीं रूठना,
वस्ले हिज्र ये कैसा
वा ए किस्मत मेरी,
क्या वहशत गाह पे आओगे
सिमट सिमट सी गई है
फजा ए बेपाया
तुम ही बताओ कब
पुरानी राह पे आओगे

गुजर गाह - रास्ता
जल्वा गाह - प्रेयसी का घर
जियारत गाह - तीर्थ स्थान
वस्ले हिज्र - मिलन-वियोग
वहशत गाह - सुनसान जगह
वा ए - हाय हाय
बेपाया - अनंत, असीम

प्रणेश गुप्ता, उपायुक्त

संस्कार के बीज

बोलना सीखते ही तुतलाती–सी बोली में वह कुटुम्ब के सारे सदस्यों के नाम बता देता। घर के सदस्य उस से सब के नाम पूछते। बालक खुशी–खुशी बताता जाता और फिर उसके दादाजी खुश होकर, कंधे पर बिठाते और 10 पैसे की मीठी गोली दिलाकर लाते। एक दिन बालक के पिता साथी अध्यापक को घर लेकर आये। वही क्रम दोहराया गया। बच्चे ने खुशी–खुशी नाम बताये और फिर बोला 'अब दो 10 पैसे'। मना करने पर भी उन्होंने बालक के हाथ पर पैसे रखे और चले गए। बालक के पिता को ये आदत ठीक नहीं लगी। एक थप्पड़ बच्चे के गाल पर पड़ा। 10 पैसे का सिक्का खनखनाता हुआ हाथ से छिटक कर दूर जा गिरा और बच्चे ने आँसूओं के साथ स्वाभिमान का पहला स्थायी सबक सीखा। 3–4 बरस बाद बच्चा अपने पिता के साथ बाजार जा रहा था। पिता के कोई साथी मिल गए। उन्होंने बच्चे को प्यार से 5 रूपये का नोट देने की कोशिश की। बच्चे के बार–बार मना करने पर भी उन्होंने जबरदस्ती उसके हाथ में थमा दिया और बातों में मशगूल हो गए। बच्चा धर्म संकट में पड़ गया। पता नहीं क्यूँ उसने नोट के दो टुकड़े कर दिए और रोने लगा। पिता तो सारा माजरा समझ गए। अंदरूनी खुशी महसूस की।

बालक पाठशाला जाने लगा। उस को भी अन्य बच्चों की तरह स्लेट पर लिखने की बड़ी कलम (खड़ी) का शौक था। एक साथी बालक उसे रोज बड़ी–बड़ी नई कलम लाकर देता। बच्चा घर ले जाता। माँ को पता चला तो पूछताछ की। उन्होंने पिताजी को बताया। पिताजी अगले ही दिन पाठशाला पहुँचे, गुरूजी से शिकायत की। बालक को बुलाया गया। उसके मित्र को भी बुलाया गया। नन्हें से हाथों पर एक–एक बेंत पड़ी और बालक ने अपरिग्रह–अस्तेय–स्वावलंबन का पाठ पूरी जिंदगी के लिए अंगीकार कर लिया। पिता की शुरू से इच्छा थी कि बेटा बड़ा होकर अच्छा अधिकारी बने। शायद तब लोग मन ही मन हँसते भी होंगे मास्टर साहब की सोच पर। लेकिन कड़ी मेहनत, अथक संघर्ष, लम्बी साधना के पश्चात आखिर एक दिन पिता का सपना साकार हो ही गया। आज बेटा एक सफल अधिकारी है और उस थप्पड़ और बेंत से मिली हुई सीख उसके अन्तरमन में आज भी समाहित है।

कु. वर्तिका श्रीवास्तव की 'टीम किल बिल' की विश्व स्तरीय उपलब्धि

कु. वर्तिका श्रीवास्तव
(प्रथम पंक्ति में बांये से तीसरे स्थान पर)

सेंटर फॉर एनवायरनमेंट प्लानिंग एवं टेक्नोलोजी (सीईपीटी) अहमदाबाद की 'टीम किल बिल' ने अमेरिका के ऊर्जा विभाग द्वारा अप्रैल 2017 में कोलोराडो में आयोजित 'रेस टू जीरो' प्रतियोगिता की 'शहरी एकल परिवार श्रेणी' में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस टीम की सदस्या एम. टेक (बीईपी) की छात्रा कु. वर्तिका श्रीवास्तव अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय में कार्यरत सहायक आयुक्त श्री संजय के. श्रीवास्तव की यशस्वी पुत्री है। भारत में बिजली 'बिल' (कमी) को 'किल' (मार) करने के लक्ष्य के साथ इस टीम ने प्रोजेक्ट तैयार किया और इस उपलब्धि को टाइम्स ऑफ इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस, मिरर, गुजरात समाचार आदि ने भी प्रमुखता से प्रकाशित किया है।

राज मोहन गौतम, अपर आयुक्त

कैसे लिखे रोमन अंक

कई बार भारी भरकम विभागीय फाइलों को देखते हुए यह तथ्य सामने आता है कि इन फाइलों के टिप्पण पृष्ठ/नोट शीट पर रोमन अंक या तो सही तरीके से नहीं लिखे होते हैं या गलत होते हैं। यह सर्वाधिक तब होता है जब नोट शीट पर पृष्ठांकन चालीस से पार हो जाता है। अतः रोमन अंकों का यथोचित प्रयोग करने के लिये हम पहले इन अंकों के आधारभूत ज्ञान को समझ लेते हैं।

मूलतः रोमन अंक कुछ वर्णों सहित या रहित एक सम्मिश्रण होता है जिसमें निम्नलिखित वर्ण शामिल है– I (एक) V(पांच) X(दस) L(पचास) C (सौ) D (पांच सौ) M (हजार) ।

- यदि कोई लघु अक्षर या वर्णमाला का वही अक्षर दायीं तरफ प्रयुक्त होता है तो उसको जोड़ा जाना चाहिये। तथापि, एक जैसे अक्षरों का प्रयोग तीन बार से अधिक लगातार नहीं होना चाहिये। उदाहरणार्थ हम तीन के लिये III का प्रयोग कर सकते हैं लेकिन चार के लिये IIII का प्रयोग नहीं कर सकते।
- यदि कोई लघु अक्षर दीर्घाक्षर के बांयी तरफ प्रयुक्त होता है तो उस अंक को दीर्घाक्षर में से घटाया जाना चाहिये। जैसे कि यदि हम IV लिखते हैं तो इसका अर्थ हुआ पांच में से एक कम अर्थात चार। इसी प्रकार IX का अर्थ हुआ दस में से एक कम अर्थात नौ। हरेक चौथे एवं नौंवे अंक के लिये इसी तरह के अंक प्रयुक्त होने चाहिये।
- 11 से 20– XI, XII, XIII, XIV, XV, XVI, XVII, XVIII, XIX (हम उन्नीस के लिए IXX का प्रयोग नहीं कर सकते क्योंकि दो अंक की संख्या में चरम बांयी ओर का अक्षर समान अथवा बड़ा होना चाहिये) और XX क्रमशः
- 21 से 30= XXI, XXII, XXIII, XXIV, XXV, XXVI, XXVII, XXVIII, XXIX और XXX क्रमशः
- 31 से 40=XXXI, XXXII,XXXIII, XXXIV, XXXV, XXXVI, XXXVII,XXXVIII, XXXIX और XL (अधिकांश फाइलों में यह देखने में आता है कि चालीस के लिये XXXX लिखा जाता है जो कि सही नहीं है।)
- 41 से 50=XLI, XLII, XLIII, XLIV, XLV, XLVI, XLVII, XLVIII, XLIX और L क्रमशः
- 51 से 89=(यादृच्छिक (Random) तरीके से चयनित 58 =LVIII, 69 = LXIX (50+10+9), 76 = LXXVI, 89 = LXXXIX
- 90 से 100 = XC, XCI, XCII,XCIII,XCIV, XCV,XCVI,XCVII, XCVIII,XCIX और C.
- 199, 249, 299, 349, 399, 449 = CXCIX ,CCXLIX,CCXCIX ,CCCXLIX , CCCXCIX और CDXLIX
- 200, 250, 300, 350, 400, 450 – 500=CC, CCL,CCC,CCCL,CD, CDL (हमें LD नहीं लिखना चाहिये) और D.
- 549, 599, 699, 799, 899=DXLIX, DXCIX, DCXCIX, DCCXCIX और DCCCXCIX.
- 550, 600, 650, 700, 750, 800, 850, 900–950 =DL, DC, DCL, DCC, DCCL,DCCC, DCCCL, CM और CML.
- 999 = CMXCIX {CM=1000–100=900, XC=100-10=90, IX=10 -1= 9, अतः 900+90+9=999}
- . नम्बर के ऊपर डेश का चिन्ह 1000 से गुना का अंक बनाता है।

उदाहरण के लिए V̄ 5000 बन जाता है। हालांकि 4000 के लिए हमें IV̄ का प्रयोग करना होगा, (न कि MV̄ = 5000-1000) इसका कारण यह है कि M(1000) मूल्य के अनुसार V(5) से बड़ा है। अतः (घटाने के लिए) M को V के बांयी तरफ नहीं रखा जाना चाहिए. (MV = 1000 + 5)

$\bar{X}$ 10,000 बन जाता है, $\bar{L}$ 50,000 बन जाता है, $\bar{C}$ 100,000 बन जाता है तथा $\bar{D}$ 5,00,000 बन जाता है, व $\bar{M}$ 10,00,000 बन जाता है,

अब हम लिख सकते हैं कि भारत को XV.VIII.MCMXLVII में आजादी मिली (सबसे बॉयीं तरफ M = 1000 चूंकि M (बांयीं तरफ से तीसरा) से पहेल C छोटा है, हमें इसको घटाना पड़ेगा। अत: 1000 - 100 = 900, इसके बाद L के बॉयीं तरफ X, इसलिए हमें 50 में से 10 घटाना पड़ेगा = 40। इसके बाद 7 है। (15.08.1947)

I-VII-MMXVII (1.7.2017) से भारत में जीएसटी कार्यान्वित हो चुका है।

तदापि यह हैरानी की बात है कि शून्य के लिए अलग से कोई वर्णाक्षर अथवा कोई अन्य सूचक नहीं है। जी हाँ, यह सत्य है।

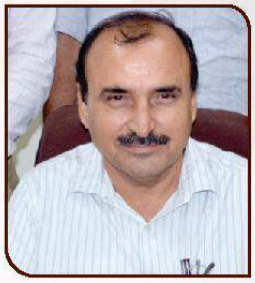

पुनर्जन्म की कोरी-कल्पना

पुनर्जन्म केवल कोरी कल्पना के अलावा कुछ नहीं है। अगर हम इस धरती के ऊपर जीवन का इतिहास उठाकर देखें तो एक भी उदाहरण पुनर्जन्म का नहीं है। इस पृथ्वी पर जिसने भी जन्म लिया है, इसकी मृत्यु निश्चित है। हर प्राणी अपने आप में अद्वितीय है। अगर पुनर्जन्म होता तो हुबहू पिछले जन्म जैसा रंग–रूप, बुद्धि, डीएनए सब कुछ वैसा ही होता। हर प्राणी का डीएनए अलग है। इन्सान की बुद्धि अलग परिस्थितियों में विकसित की जा सकती है। जन्म के समय जो बुद्धि होती है, वह शिक्षा, परिस्थितियों तथा अनुभव के द्वारा प्रभावित होती है। अगर पुनर्जन्म होता तो प्राणी की बुद्धि मृत्यु के समय जैसी थी वैसी ही पुनर्जन्म के समय भी होनी चाहिए। पर ऐसा सम्भव नहीं है।

अभी तक जितने ग्रहों की खोज की गई है, केवल पृथ्वी पर ही जीवन पाया गया है। पृथ्वी पर जीवन कुदरती अनुकूल परिस्थितियों की वजह से सम्भव हुआ है। इसके पीछे कोई ईश्वर इसको चला रहा होता तो, कुछ प्राणियों को अंधा, बहरा, लूला–लंगड़ा, मंद–बुद्धि, कुरूप क्यों पैदा होने देता या जन्म के बाद बीमार, अंधा, बहरा, लूला–लंगड़ा, भयभीत, पागल, दु:खी क्यों होने देता? अगर सब कुछ ईश्वर की इच्छा अनुरूप होता तो दुनिया में इतना दु:ख, इतनी घृणा क्यूँ ? अगर सभी प्राणी उसकी सन्तान है तो इन सन्तानों के दिल में एक दूसरे के प्रति इतनी नफरत क्यों है ? इन्सान एक दूसरे को मारता काटता क्यूँ है ? कानून की जरूरत क्यूँ है ? सामाजिक नियमों की जरूरत क्यूँ है ? मेरे विचार से पृथ्वी पर जीवन कुछ अनुकूल परिस्थितियों की वजह से है । इसके पीछे कोई सुनियोजित सोच या ईश्वर रूपी कोई शक्ति का हाथ है, ऐसा मैं नहीं मानता। हर प्राणी का जन्म भी कुछ अनुकूल परिस्थितियों की वजह से ही होता है। इसी वजह से पृथ्वी पर भी अलग–अलग जगह अलग–अलग तरह के प्राणी एवं पौधे पाये जाते है। जो प्राणी समुद्र में पाये जाते है, वो जमीन पर नहीं पाये जाते है। जो जमीन पर पाये जाते है वो पानी में जिन्दा नहीं रह सकते।

हमीराराम चौधरी, सहायक आयुक्त

ज्ञानचंद जैन, संयुक्त आयुक्त

वस्तु एवं सेवाकर : एक नवीन युग का सूत्रपात

वस्तु एवं सेवाकर का आगाज एक नवीन युग के आगमन का सूचक है। देश बदल रहा है। बड़ी ही खुशी की बात है कि हमारा विभाग इस नई व्यवस्था का ध्वजवाहक है। इस महान राष्ट्र को आज़ादी दिलाने के लिए कितने ही देशभक्तों ने आपने प्राणों का बलिदान किया. आज़ादी मिलने के बाद देश के राजनैतिक एकीकरण के लिए सरदार पटेल ने जी जान लगा दी. इसी दिशा में वस्तु एवं सेवाकर भी देश की आर्थिक आज़ादी और आर्थिक एकीकरण का एक महान प्रयास है। इसे सफल बनाना हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है।

पिछले दो महीने में मोटे तोर पर जीएसटी का सुचारू क्रियान्वयन हुआ है। कुछ चुनोतियाँ अब सामने दिखने लगी है। सबसे बड़ी चुनौती है सिस्टम की. जीएसटी नेटवर्क पर करदाताओं को मासिक विवरणी (रिटर्न) दाखिल करने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। रजिस्ट्रेशन में सुधार करने में भी काफी दिक्कतें आ रही है। कई सारे प्रपत्र(फोर्म) अभी जीएसटी नेटवर्क पर सक्रिय नहीं हुए हैं। इसके अलावा अभी भी दूरस्थ क्षेत्रों में जीएसटी को लेकर कई सारी भ्रांतियां फैली हुई है। प्रधानमंत्रीजी के निर्देशानुसार, करदाताओं का आधार (संख्या) एक करोड़ से तीन करोड़ तक बढ़ाना भी एक महत्वकांक्षी लक्ष्य है।

इन सभी चुनौतियों से निपटने के लिए विभाग को कमर कसकर सामने आना होगा और करदाताओं के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर काम करना होगा। जीएसटी सेवा केन्द्रों को इस दिशा में महती प्रयास करने होंगे। अभी तक जीएसटी सेवा केन्द्रों ने बहुत अच्छा काम किया है। हर रेंज अधिकारी को अब अपनी पूरी काबिलियत का परिचय देना होगा। अगर हम अगले छह महिने अच्छे से निकाल पाए और करदाताओं को पूरी सेवाएँ दे पाए तो यह हमारे विभाग के लिए और देश के लिए हमारा बहुत बड़ा योगदान होगा।

जीएसटी का क्रियान्वयन, हमारे विभाग को एक नया रूप देने के लिए एक सुनहरा अवसर है। नए कर की अपेक्षा के अनुरूप हमें एक नये दृष्टिकोण, नयी सोच, नयी कार्यशैली और नवीन जोश से काम करना है ताकि हम आगामी पीढ़ी के लिए नए भारत का सृजन कर सकें। वह भारत जहाँ "एक देश एक कर एक बाज़ार" की अवधारणा साकार हो सके। जहाँ उद्योग धंधे, व्यापार और व्यवसाय फले फूलें और जहाँ गरीबी बेरोजगारी और भुखमरी का नामोंनिशान मिट जाए।

राहुल परमार, सहायक आयुक्त

दुआ-बद्दुआ की सप्लाई-जीएसटी के परिप्रेक्ष्य में

नोट : गंभीरता से न लें।

जीएसटी लागू होने के बाद हमारे देश में अर्थशास्त्रियों की संख्या उत्तरोतर बढ़ रही है, ऐसे ही चंदूलाल और चमन दो नए अर्थशास्त्रियों का जन्म हुआ था। इनका मानना था कि जीएसटी में काफी संभावनाएं है, जो कॉन्सिल के ध्यान में नहीं आई है, उनके संवाद का आनंद लें।

चंदूलाल : अरे चमन, देखा जीएसटी लागू हो गया।

चमन : हाँ भाई, पर घंटी तो नहीं बजाई राष्ट्रपति ने बटन दबाया था।

चंदूलाल : चमन, तू बस घंटी पे अटका है, यहाँ जीएसटी में कुछ चीजें छूट गई है और मैं बात कर रहा हूँ काउन्सिल को बताने को।

चमन : क्या छूट गया रे चंदू।

चंदूलाल : देख भाई, जीएसटी लागू होता है सप्लाई पर और जिस सप्लाई से बिजनेस में वृद्धि हो या बिजनेस में उसका उपयोग हो...

चमन : हाँ, सुन रहा हूँ, थोड़ा समझ भी रहा हूँ।

चंदूलाल : तो फिर मेरा मानना है कि हम यहाँ चाय पीते हुए लाखों लोगों को दुआ–बद्दुआ देते होंगे जिससे उनका बिजनेस भी प्रभावित होता है।

चमन : वो कैसे ?

चंदूलाल : देखो भाई, अभी जिओ की स्कीम (मुफ्तवाली) चल रही थी, हम भी इन लाखों लोगों में है जिन्होंने मुकेशभाई को दुआएँ दी है। इसका मतलब उनका बिजनेस प्रभावित हो रहा है।

चमन : हाँ यार, बात तो सही है।

चंदूलाल : मैं सोच रहा हूँ, दुआएँ देने का पैसा चार्ज करूं और बद्दुआ न देने पर भी पैसा चार्ज करूं।

चमन : भाई, इससे तो तू जीएसटी में आ जाएगा। अगर दुआ–बद्दुआ टर्नऑवर 20 लाख से ज्यादा हो गया तो।

चंदूलाल : भाई तू रहा बेवकूफ का बेवकूफ, मैं अपनी दुआ–बद्दुआ ट्रेडिंग फर्म को परिवार के सारे सदस्यों में बाँट दूँगा और अलग–अलग नाम से चलाऊँगा।

चमन : अच्छा इससे क्या होगा।

चंदूलाल : इससे हमारी एक फर्म का टर्नऑवर 20 लाख से बढ़ने नहीं देने दूंगा और दुआ–रिसीवर बद्दुआ–नॉन रिसीवर रिवर्स चार्ज में जीएसटी देगा। इससे इस देश की उन्नति में चाय पीते हुए योगदान करेंगे।

चमन : भाई, बात तो तेरी सही है। चाय के पैसे दे दे आज।

चंदूलाल : मैं यहाँ देशोन्नत्ति की बात कर रहा हूँ और यहाँ तुम चाय पे अटके हो। उधार लिखवा लो। चायवाला कौन–सा इनवॉइस बनाएगा ?

चायवाला : चंदू और चमन, मैं सैन्ट्रल टैक्स में चयनित सप्लायर हूँ क्यूँकि मेरा टर्नऑवर 1.5 करोड़ से ऊपर है।

चंदू–चमन ! बेहोश है तब से ...

आर. डी. मीणा, सहायक आयुक्त

तीर्थ नगरी पुष्कर

राजस्थान के अजमेर शहर से 14 किमी. दूर उत्तर–पश्चिम में अरावली पर्वतमाला की गोद में बसा 'पुष्कर' नाम का छोटा–सा शहर भारत के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। पर्यटकों का स्वर्ग 'तीर्थराज पुष्कर', पद्मपुराण के अनुसार सभी तीर्थों में श्रेष्ठ माना गया है। आज देश–विदेश में अपनी विविध थातीपरक आस्थाओं, मंदिरों, सरोवर और ग्राम्यांचल की सीधी महक के लिए चर्चित यह नगर विश्व में अकेला ऐसा स्थान है जहाँ ब्रह्मा का मंदिर स्थित है।

यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता, धार्मिक वातावरण एवं विश्व प्रसिद्ध मेले की चहल–पहल, पर्यटकों एवं धार्मिक श्रद्धालुओं के लिए स्वर्ग के समान है जो उन्हें बार–बार अपनी ओर आकर्षित करती है। यहाँ आने वाला हर सैलानी इस दिव्य, अलौकिक स्थान पर आकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता है। इसे वेदमाता गायत्री की जन्मभूमि भी माना जाता है। माँ शक्ति सहित अन्य देवी–देवताओं के शक्ति पीठ भी यही है। यह भी अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है। इसीलिए चारों धामों की यात्रा करके भी यदि कोई पुष्कर सरोवर में स्नान नहीं करता है तो उसके सारे पुण्य निष्फल हो जाते है। प्राचीन मान्यता के अनुसार यह कहा जाता है कि 'सारे तीर्थ बार–बार, पुष्कर तीर्थ एक बार', इसलिए इसे तीर्थों का गुरू, पाँचवां धाम एवं पृथ्वी का तीसरा नेत्र कहा जाता है। इसके अतिरिक्त पुष्कर नगरी व्यावसायिक और पर्यटन की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है।

यहाँ प्रतिवर्ष दो विशाल मेलों का आयोजन किया जाता है। पहला मेला कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक तथा दूसरा मेला वैशाख शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक लगता है।

मेले के दिनों में ऊँटों व घोड़ों की दौड़ खूब पसंद की जाती है। सबसे सुन्दर ऊँट व ऊँटनी को पुरस्कृत किया जात है। दिन में लोग जहाँ पशुओं के कारनामे देखते रहते हैं, तो वहीं शाम का समय राजस्थान के लोक–नर्तकों के लोक संगीत का होता है। तेरहताली, भंपवादन, कालबेलिया नाच और चकरी नृत्य का ऐसा समां बँधता है कि लोग झूमने लगते हैं। दूर तक फेले पर्वतों के बीच विस्तृत के बीच विस्तृत मैदान पर आए सैकड़ों ग्रामीणों का कुनबा मेले में अस्थायी आवास बना लेता है। पशुओं की तरह–तरह की नस्लें उनका चारा, औजार, कृषि के यंत्र और उनके तंबू डेरे विविधता का सुन्दर समा बाँध देते है।

मेले के दिनों में पूरे पुष्कर को रोशनी से सजाया जाता है। राजस्थान के पारंपरिक एवं सांस्कृतिक नृत्य–गीत के अतिरिक्त देशी एवं विदेशी कलाकार भी अपनी कला का प्रदर्शन करते है।

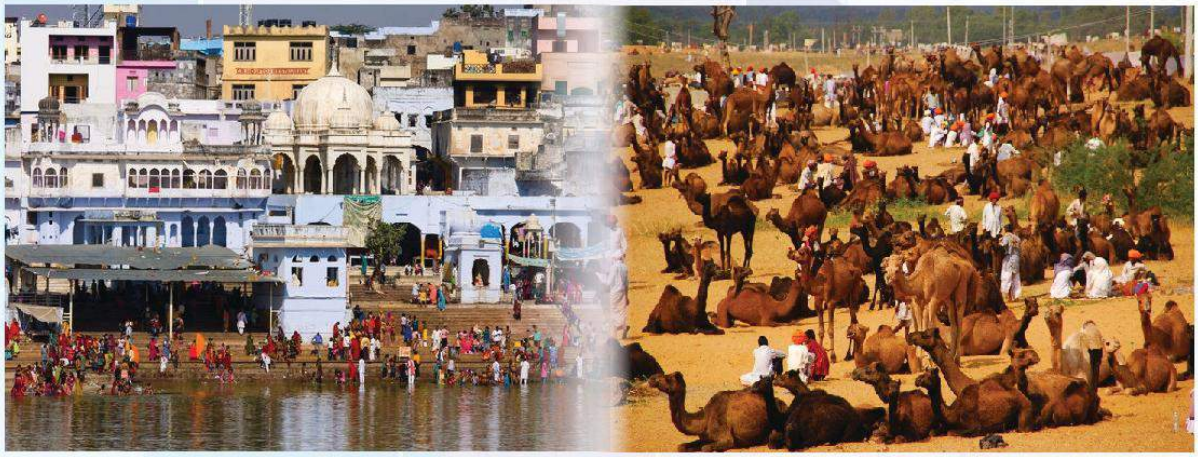

भावना सती, कर सहायक

जानिए अपने मन की असीम शक्ति

आज मैं आपके साथ मन की असीम शक्ति पर बात करने जा रही हूं। उम्मीद है इससे आपको फायदा मिलेगा।

क्या आपने आमिर खान की एक फिल्म "तारे जमीन पर" देखी है ? इस फिल्म में एक दृश्य था जिसमें आमिर खान बच्चे के पिता को सोलोमन आइलैंड के बारे में बताता है। इस आइलैंड के आदिवासी पेड़ों को काटते नहीं हैं। वे पेड़ों के आसपास इकट्ठे होते हैं और कई घंटो तक पेड़ों को कोसते हैं, जी भर के गालियाँ देते हैं। जिसकी वजह से कुछ हप्तों के बाद वो पेड़ अपने आप सूख कर गिर जाते हैं।

बहुत से लोगों ने इस पर अपने विचार दिए। ब्रूस लिप्टन के अनुसार यह कोई चमत्कार नहीं है। इसकी वजह है हमारे मन की असीम शक्ति। हमारे मन के 3 स्तर/ अवस्थाएं होती हैं :-

(1) चेतन अवस्था

(2) अर्धचेतन अवस्था

(3) अचेतन अवस्था

हमारा अर्धचेतन मन हमारे चेतन मन से कई गुना ज्यादा शक्तिशाली है और यही हमारी जिंदगी की बहुत सी चीजों को तय करता हैं। बहुत बार हम अपनी कई खराब आदतों को बदलने की कोशिश करते हैं लेकिन बहुत सी कोशिश के बाद भी बदल नहीं पाते हैं, क्योंकि हमारी आदतें हमारे अर्धचेतन मन में इतनी गहराई से स्थापित हो जाती हैं कि हमारे चेतन मन पर हमारी इतनी कोशिशों का भी कोई असर नहीं होता।

2500 साल पहले यही बात महात्मा बुद्ध भी कह चुके हैं कि हम जो भी हैं अपनी सोच की वजह से ही हैं। ये बात इंसानों पर भी लागू होती है। बार-बार एक ही बात कहने से हमारे मन की भी संरचना बदलती रहती है। इंसान की सही या गलत दिशा उसका मन ही तय करता है। जब हम किसी इंसान की बुराई करते हैं, उसे कोसते हैं, तो वास्तव में हम उस इंसान के मन में नकारात्मक विचारों को स्थापित करते हैं। अंजाने में अभिभावक और अध्यापक बच्चों की बड़ाई से ज्यादा बुराई करते हैं ताकि बच्चा और अच्छा काम करने की कोशिश करे, लेकिन इस बात का उल्टा असर देखने को मिलता है। इसलिए सही काम करने पर अपने बच्चों को हमेशा प्रोत्साहित करें और गलत काम करने पर डाँटने के बजाय बच्चों को सही-गलत के बारे में बताएं।

इसी तरह चाहे वो आपका दोस्त हो या भाई-बहन उसे कभी हतोत्साहित न करें।

तकनीक के सहयोग से राजभाषा का विकास

राजभाषा के विकास के आशानुरूप नहीं होने का एक कारण यह बताया जा रहा था कि आज अग्रेंजी भाषा के विकास एवं प्रचार–प्रसार के लिये जितनी तकनीक एवं ई–टूल्स उपलब्ध है उस मुकाबले में हिंदी के विकास के लिये तकनीक एवं ई–टूल्स का विकास नहीं हो पाया है। लेकिन अब यह बाधा हिंदी के विकास एवं प्रचार–प्रसार में नहीं आ पायेगी और हिंदी के लिये भी आज इंटरनेट पर, कंप्यूटर आदि पर उतनी ही तकनीक एवं उतने ही ई–टूल्स उपलब्ध हैं जितने अन्य किसी भाषा के लिये है।

हाल ही में मैंने इंदौर में पश्चिमी एवं मध्य क्षेत्रीय राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी में भाग लिया तो मुझे तकनीक एवं ई–टूल्स से संबंधित इतनी जानकारी प्राप्त हुई जिसके प्रयोग से हम राजभाषा के प्रयोग को अंग्रेजी से भी अधिक बढ़ा सकते हैं।

यहां कुछ ई–टूल्स/ई–उपकरणों का विवरण दिया जा रहा है जिनकी सहायता से हिंदी में टाइप नहीं जानने वाला व्यक्ति भी अंग्रेजी से जल्दी हिंदी टाइप कर पायेगा। यहां तक की किसी भी भाषा में टाइप में असहज महसूस करने वाला व्यक्ति भी हिंदी में पांच मिनट से भी कम समय में पूरा एक पृष्ठ टाइप कर पायेगा।

कुछ तकनीक एवं ई–उपकरण इस प्रकार है–

यूनिकोड–

यूनिकोड एक ऐसा उपकरण है अथवा एक तकनीकी मानक है जो विश्व स्तर पर प्रचलित सभी लिपियों के वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के लिये एक विशेष/यूनीक कोड प्रदान करता है। यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिये एक विशेष संख्या प्रदान करता है। चाहे कोई भी भाषा, प्रोग्राम या कंप्यूटर प्लेटफॉर्म हो, यह बदलता नहीं है। इस मानक को एपल, एचपी, आईबीएम, माइक्रोसॉफ्ट, ऑरेकल, सैप, सन, यूनिसिस जैसी प्रमुख कंपनियों से इसे अपनाया है। यह सभी संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजरों एवं अन्य कई उत्पादों में उपलब्ध है।

कंप्यूटर पर एकरूपता के लिये यूनिकोड आवश्यक है। इससे हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी की तरह सरल कार्य किया जा सकता हैं। कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई–मेल, वेबसाइट निर्माण आदि किये जा सकते हैं। हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान–प्रदान किया जा सकता है।

किसी भी कंप्यूटर पर यूनिकोड की सुविधा निःशुल्क है। इंटरनेट के माध्यम से इसे गूगल से डाउनलोड कर अपने कंप्यूटर पर इंन्स्टाल किया जा सकता है जिसमें मुश्किल से पांच मिनट से अधिक का समय नहीं लगता। फिर आप अगर थोड़ा बहुत भी अंग्रेजी कुंजीपटल समझते हैं तो हिंदी में सहजता और आसानी से टाइप कर सकते हैं। जैसे– यदि आप लिखते हैं– Ram ghar ja raha hai– तो स्क्रीन पर आयेगा– राम घर जा रहा है। इस तरह आप आसानी से हिंदी में कार्य कर पायेंगे।

गूगल ट्रांसलेशन–

यह एक ऐसा इंटरनेट उपकरण या युक्ति है जिससे आप अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा से हिंदी में अनुवाद कर सकते हैं। यह सुविधा ऑनलाइन उपलब्ध हैं। आप किसी भी परिच्छेद/पैरेग्राफ को यहां रखिये और यह हिंदी में अनुवाद कर देगा।

बोल कर हिंदी टाइपिंग–

हिंदी लिखने के लिये यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। आप हिंदी में शब्द अथवा पंक्तियां बोलते जाइये और

बोलने के साथ–साथ ही तुरंत हिंदी में आपकी बात टाइप होती जायेगी। साथ ही अल्प विराम, पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक चिन्ह आदि भी लगते जायेंगे।

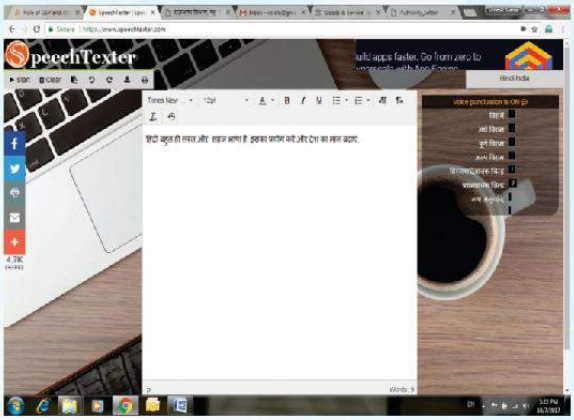

इसके लिये आपको अधिक कुछ नहीं चाहिये। आपका कंप्यूटर या लेपटोप इंटरनेट से जुड़ा हुआ होना चाहिये और एक हेडफोन आपके पास होना चाहिये जिससे आप जो बोलें वो स्पष्टता के साथ रिकोर्ड हो जाये। वैसे तो ध्वनि टाइपिंग की कई वेबसाइट एवं उपकरण है, पर सटीकता के साथ टाइप करने वाली कुछेक वेबसाइट हैं जिनका विवरण यहां दिया जा रहा है।

www.speechtexter.com पर आप जाइये। ध्यान रहे, आपका हेडफोन लगा हुआ हो और इंटरनेट कनेक्शन भी हो। इस वेबसाइट पर जाकर दायीं तरफ भाषा के विकल्प में आप 'हिंदी इंडिया' का चयन कर लिजिये। उसके बाद 'स्टार्ट' बटन को दबाइये और हिंदी में बोलना शुरू कर दीजिये। जो जो और जैसा आप बोलते जायेंगे वैसा टाइप होता जायेगा। इसे आप कहीं भी कॉपी करके संपादित कर सकते हैं। मेरा स्वयं का अनुभव है कि यदि आपका हिंदी उच्चारण ठीक ठाक हो तो यह युक्ति / उपकरण आपके द्वारा बोले गये शब्दों / पंक्तियों को 99 प्रतिशत से अधिक शुद्धता के साथ टाइप कर देता है। इसके अलावा आप गूगल वॉइस टाइपिंग का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

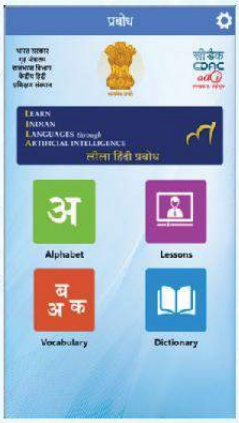

लीला राजभाषा एप–

केन्द्र सरकार के कार्यालयों एवं हिंदी सीखने वालों के लिये यह एक बहुत ही बढ़िया युक्ति है जिससे आप अपनी भाषा में हिंदी सीख सकते हैं। इसके लिये आपको कंप्यूटर की भी आवश्यकता नहीं है। अपने मोबाइल पर लीला एप डाउनलोड कीजिये और घर बैठे हिंदी में प्रवीण, प्राज्ञ या पारंगत बनिये।

ई–महाशब्दकोश–

यह एक बहुत ही उपयोगी ऑनलाइन हिंदी शब्दकोश है जिसे राजभाषा विभाग ने विकसित किया है। आप यहां जाकर किसी भी अंग्रेजी शब्द को टाइप कीजिये और उसका आधिकारिक हिंदी शब्दार्थ प्राप्त कीजिये।

अब आपको आधिकारिक शब्दकोश मिल गया। बोलकर टाइप करने का साधन भी मिल गया। हिंदी लिप्यंतरण का उपकरण भी बता दिया। हिंदी सीखने की मोबाइल एप भी दे दी। हिंदी में काम ना करने का अब भी कोई बहाना शेष है ?

दिनेश कुमार जांगिड़, उपायुक्त

अविनाश कुमावत
कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रयोग

किसी अंग्रेज ने किसी हिन्दुस्तानी से कहा था कि जानते हो हमारा सूरज क्यों नहीं डूबता ? हम जिस देश में भी कदम रखते हैं, सबसे पहले हम उसकी जीभ नोंच लेते हैं। उस देश की लोक–जिव्हा यानी भाषा को जंजीरों में जकड़ लेते हैं। उस अंग्रेज़ का यह कथन हिंदुस्तान पर सौ–फीसदी सही साबित हुआ। अंग्रेजी भाषा के विष–दंश से हम आज भी पीड़ित हैं।

महात्मा गांधी ने लोक–मानस की इस गुत्थी को बड़ी गहराई से समझा व सुलझाया। पं. गिरिधर शर्मा का सन् 1915 का प्रस्ताव कि 'हिन्दी को हिन्दुस्तान के कोने–कोने में पहुँचा दो और देश की महत्ता और गौरव देश के हिमगिरि और गंगा को लोक–भाषाओं में ही जगाया जा सकता है, अन्यथा नहीं। अतः उन्होंने हिंदी के प्रचार–प्रसार को अपने जीवन का एक अविछिन्न अंग बना लिया।

अंग्रेजों ने ढाई सौ वर्षों तक भारत पर राज किया जिसे आँख बंद कर हम अपनाए चले जा रहे हैं। परतंत्र अवस्था में हम अपनी भाषा को कायम नहीं रख पाए । चीन हमसे भी ज्यादा परतंत्र रहा है और हमसे बाद में स्वतंत्र हुआ, किन्तु चीनी नेता माओ ने सर्वप्रथम चीन की पहचान की भाषा चीनी अर्थात मन्दारिन घोषित कर दी। सत्तर वर्ष हो गए हमारे देश की आजादी को, किन्तु अभी तक हमारी कोई राष्ट्रभाषा तक नहीं है। विदेशी भाषा अंग्रेजी को सरकारी कामकाज का माध्यम बनाए रखने की अक्षम्य गलती करते जा रहे हैं। जिनको आवश्यकता हो वे दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब सीखे। उनके ज्ञान–विज्ञान से हमारे देश को लाभान्वित करें। **विरोध अंग्रेजी से नहीं है, किंतु स्वतंत्र राष्ट्र की भाषाओं पर पराई भाषा का वर्चस्व होना असहनीय है।**

हिंदी हमारे देश के सबसे बड़े भू–भाग पर बोली–लिखी और समझी जाने वाली भाषा है। यह भारत में रहने वाले लोगों की संस्कृति के तत्वों को अंतर्निहित करने की क्षमता रखती है।

हिंदी राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, बिहार, हिमाचल–प्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, झारखंडए छत्तीसगढ आदि प्रांतों में आम–आदमी द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। इसके अतिरिक्त दिल्ली, मुम्बई और कोलकाता जैसे महानगरों और गुजरात तथा महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में हिंदी समझने वालों की काफी बड़ी संख्या है। अन्य हिंदीतर भाषी प्रदेशों में भी हिंदी समझने वालों की संख्या अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक है। हिंदी का रचनात्मक साहित्य समृद्ध और वैविध्यपूर्ण है। इसमें निरंतर प्रयोग होते रहे है और उसका निरंतर विकास हो रहा है। संचार तथा फिल्म के क्षेत्र में हिंदी का तीव्र गति से विस्तार हुआ है। हिंदी में पत्रिकाओं, अखबार तथा पुस्तकों का प्रकाशन बढ़ा है। यहाँ तक कि विदेशी कम्पनियों ने भी हिंदी के महत्व को स्वीकारा है। गूगल जैसी विश्वस्तरीय कंपनी ने हिंदी पर ज्यादा से ज्यादा काम करना शुरू कर दिया है। टी.वी. चैनलों पर प्रसारित होने वाले क्रिकेट मैचों का प्रसारण व कमेंटरी अब हिंदी में होना शुरू हो गई है। हिंदी में प्रादेशिक भाषाओं और बोलियों से शब्दों के आदान–प्रदान करने की उदारता निहित है।

प्रजातंत्र की सफलता के लिए समाज की भाषा को समर्थ बनाया जाना आवश्यक है, ताकि समझने, निर्णय लेने और काम करने में सहजता हो। शिक्षा, स्वास्थ्य, कोर्ट, कचहरी, सरकारी कार्यालय तथा बाजार आदि के विभिन्न उपक्रमों में हिंदी के अधिकाधिक उपयोग से ही सत्ता का विकेन्द्रीकरण सम्भव हो सकेगा तथा जनता की शासन में भागीदारी बढ़ सकेगी। किसी भी भाषा को राजभाषा का दर्जा देते समय यह देखा जाता है कि उस भाषा को अफसर सहजता से सीख सकें, वह भाषा लोगों के धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवहार की भाषा हो, उसे बहुत लोग बोलते हो। भारत में ऐसी भाषा केवल हिंदी ही है।

अतः भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को 'राजभाषा' का दर्जा दिया गया। 'राजभाषा' का अर्थ है कि सभी प्रकार के सरकारी कामकाजों में इस भाषा का प्रयोग किया जाए। व्यक्तिगत जीवन अथवा बोलचाल में आप किसी भी भाषा को महत्व दे सकते है, किंतु जहाँ तक 'राजकाज' अर्थात देश की शासन प्रक्रिया, सरकार एवं सरकारी मशीनरी का संबंध है,

सभी कामकाज हिंदी में ही होने चाहिए। इसी वजह से हिंदी भाषा का दर्जा इसके राष्ट्रीय भाषा के दर्जे से कहीं अधिक निर्णायक, व्यवहारिक एवं सर्वमान्य होना चाहिए।

सच माने तो आज हिंदी के अच्छे दिन आये हैं। आज विश्वभर के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। हिंदी का बाजार बढ़ रहा है। हिंदी को धार्मिकता से कार्मिकता की भाषा बनाने के लिए हम सभी को उपलब्ध तकनीकों और संसाधनों का उपयोग करने की आदत डालनी होगी।

किसी भी कार्यालय में सरकारी नीति–नियमों के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी उसके प्रमुख की होती है। कार्यालय में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी भी उनमें से एक है। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि कार्यालय प्रमुख अगर रूचि लेकर कठोरता से अपने अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देश दे कि कामकाज में हिंदी का ही प्रयोग हो, तभी इस दिशा में सफलता प्राप्त होगी । जिस आयुक्तालय में मैं वर्तमान में कार्यरत हूँ, वहाँ के कार्यालय प्रमुख श्री जावेद अख्तर खान, आयुक्त महोदय स्वयं हिंदी भाषा में गहरी रूचि रखते है तथा स्वयं टिप्पण आदि में हिंदी का प्रयोग करते है। साथ ही वे अपने अधीनस्थ अधिकारियों को भी अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने के लिए निर्देशित व प्रोत्साहित करते है। इसके अलावा अपर आयुक्त महोदय श्री राज मोहन गौतम तथा प्रभारी राजभाषा अधिकारी श्री दिनेश कुमार जांगिड़ भी हिंदी में गहरी रूचि रखते हैं। प्रभारी राजभाषा अधिकारी श्री दिनेश कुमार जांगिड़, उपायुक्त महोदय ने राजभाषा का प्रभार लेने के महज दो–ढाई माह में ही आयुक्तालय में राजभाषा हिंदी को नई दिशा प्रदान की । इस दौरान उन्होंने हिंदी कार्यशाला, हिंदी पखवाड़ा, हिंदी प्रयोग के संबंध में अनुभागों तथा मण्डल कार्यालयों का निरीक्षण इत्यादि कार्यों का बड़े ही उत्साहपूर्वक संयोजन किया जिसमें सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने भी बराबर सहयोग किया । यहाँ यह उदाहरण प्रस्तुत करने का मेरा उद्देश्य यही है कि अगर वरिष्ठ अधिकारी स्वयं हिंदी के प्रति सम्मान दिखाये और रूचि ले तभी कार्यालय में हिंदी का सम्मान और प्रयोग दोनों बढ़ेगा।

प्रशासन प्रगति एवं विकास के दो मुख्य साधन होते हैं : 1) प्रलोभन या प्रोत्साहन, जिसे सकारात्मक साधन कहते है, और 2) दण्ड, जो कि नकारात्मक प्रकृति का साधन है। वैसे तो राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में राजभाषा विभाग की नीति 'प्रेरणा व प्रोत्साहन' की है, किन्तु उक्त दोनों में समन्वय भी आवश्यक है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए राजभाषा विभाग ने नकद पुरस्कार योजना चला रखी है। प्रोत्साहन के साथ यह भी आवश्यक है कि हिंदी को हतोत्साहित करने वाले या अपेक्षा के अनुरूप काम न करने वाले कार्मिकों को महसूस कराया जाये कि वे गलत कर रहें हैं। प्रत्येक अनुभाग व मण्डल का वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा समय–समय पर हिंदी कार्यान्वयन के संबंध में निरीक्षण किया जाए एवं संतोषजनक नहीं पाए जाने पर उन्हें उत्तरदायी बनाया जाए।

आज कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करना काफी आसान हो गया है। 'यूनिकोड', 'गूगल ट्रांसलिटरेशन' की मदद से हिंदी टंकण नहीं जानने वाले अधिकारी व कर्मचारी भी अंग्रेजी टंकण द्वारा हिंदी टंकण आसानी से कर सकते हैं। इसके अलावा 'स्पीच टेक्स्टर' सॉफ्टवेयर की मदद से हिंदी में बोलकर हिंदी टंकण किया जा सकता है।

अंग्रेजी के कठिन शब्दों का हिंदी अर्थ जानने के लिए प्रशासनिक शब्दावली, गूगल ट्रांसलिटरेशन तथा राजभाषा विभाग द्वारा विकसित 'ई–महाशब्दकोश' की मदद ली जा सकती है। साथ ही हिंदी अथवा द्विभाषी मानक प्रपत्र (Standard Formats) तैयार करके उनका उपयोग किया जा सकता है। प्रशासनिक कामकाज में सरल, सहज भाषा का प्रयोग किया जा सकता है, जो समझने में आसान हो। जहाँ अंग्रेजी के कठिन शब्दों का हिंदी में अनुवाद करना आसान नहीं हो वहाँ उन शब्दों को हिंदी में रूपांतरित करके भी लिखा जा सकता है, जैसे कम्प्यूटर, टेबल, ऑफिस इत्यादि। सरकारी कामकाज में अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप ही प्रयोग में लिए जाने चाहिए, यथा 1, 2, 3, ... ।

अंत में, मैं यही कहना चाहूँगा कि हमें अपनी भाषा के लिए अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाना पड़ेगा। क्योंकि माँ कैसी भी हो, वह अन्य सभी स्त्रियों की अपेक्षा सम्मान पाने की स्वतः अधिकारिणी होती है। अतः कम से कम हम अपने आयुक्तालय में हिंदी को राजभाषा बनाकर उसे सही मायने में वह सम्मान तो दे ही सकते हैं।

हर पल को खुश होकर जियो, व्यस्त रहो और सदा स्वस्थ रहो

एक गिलहरी रोज अपने काम पर समय से आती थी और अपना काम पूरी मेहनत और ईमानदारी से करती थी। गिलहरी जरूरत से ज्यादा काम कर के भी खूब खुश थी क्योंकि उसके मालिक, जंगल के राजा शेर ने उसे दस बोरी अखरोट देने का वादा कर रखा था।

गिलहरी काम करते-करते थक जाती तो सोचती कि थोड़ा आराम कर लूँ। तभी उसे याद आता कि शेर उसे दस बोरी अखरोट देगा और गिलहरी फिर से काम पर लग जाती। गिलहरी जब दूसरी गिलहरियों को खेलते देखती तो उसकी भी इच्छा होती थी कि मैं भी खेलूं, पर उसे अखरोट याद आ जाते और वह फिर काम पर लग जाती।

ऐसे ही समय बीतता रहा....

एक दिन ऐसा भी आया जब जंगल के राजा शेर ने गिलहरी को दस बोरी अखरोट दे कर आज़ाद कर दिया। गिलहरी की उमर हो गई थी। वह अखरोट के पास बैठ कर सोचने लगी कि अब अखरोट मेरे किस काम के ? वह सोचने लगी कि पूरी जिन्दगी काम करते - करते दाँत तो घिस गये, इन्हें खाऊँगी कैसे।

यह कहानी आज के जीवन की हकीकत बन चुकी है। इन्सान अपनी इच्छाओं का त्याग करता है और पूरी ज़िन्दगी नौकरी, व्यापार और धन कमाने में बिता देता है। 60 वर्ष की उम्र में जब वह सेवा निवृत्त होता है, तो उसे जो फन्ड या बैंक-बैलेंस मिलता है, वह उसे भोगने की क्षमता खो चुका होता है। तब तक पीढियां बदल चुकी होती है और परिवार को चलाने के लिए बच्चे आ जाते हैं।

क्या इन बच्चों को इस बात का अन्दाजा लग पायेगा कि इस फन्ड और बैंक-बैलेंस के लिये:-

हमारी कितनी इच्छायें मरी होंगी ? हमें कितनी तकलीफें मिली होंगी ?

हमारे कितने सपने अधूरे रहे होंगे ?

क्या फायदा ऐसे फन्ड का, बैंक-बैलेंस का, जिसे पाने के लिये पूरी ज़िन्दगी लग जाये और मानव उसका भोग खुद न कर सके। इस धरती पर कोई ऐसा अमीर अभी तक पैदा नहीं हुआ जो बीते हुए समय को खरीद सके।

इस लिए हर पल को खुश होकर जियो व्यस्त रहो, मस्त रहो और सदा स्वस्थ रहो!

बालकृष्ण तिवारी,
अधीक्षक

सोशियल मीडिया और स्मार्ट फ़ोन से व्यसनमुक्ति : आज की जरूरत

आज का युग डिजिटल युग है, हमारे दैनिक जीवन को सबसे ज्यादा प्रभावित संचार क्रांति ने किया है। इसके बहुत फायदे हुए है। पहले हम एक चिट्ठी भेजते थे तो महिनों तक वो अपने गंतव्य स्थान तक नहीं पहुँचती थी या फिर जब तक पहुँचती तब तक उस सूचना का कोई अर्थ नहीं रह जाता था। आज के युग में स्मार्ट फ़ोन के एक क्लिक से हम संसार के किसी भी कोने से जुड़ सकते है। संसार की खबरों से रूबरू हो सकते हैं। अपनी तकलीफें अधिकारियों तक पहुँचा सकते है जिनका पारदर्शी तरीके से समाधान भी मिल जाता है। ये सब कुछ सम्भव हुआ है संचार क्रांति की वजह से।

परन्तु विज्ञान के हर अविष्कार का कैसे उपयोग करना है वह उपयोगकर्ता पर निर्भर करता है। अणु के विभाजन से किसी ने बिजली बनाकर रौशनी फैलाई तो किसी ने एटम बम बनाकर विनाश कर दिया। स्मार्ट फ़ोन हमारे दैनिक जीवन में बहुत उपयोगी है, जैसे – कोई भी आपातकाल स्थिति में एक कॉल से हमें मदद मिल जाती है। हमारे शुभचिंतक हमारा हाल जान सकते हैं । आजकल मोबाइल में बहुत सारे एप्लीकेशन्स आ गए है जिनकी मदद से हम अपना ज्ञानवर्धन कर सकते है और साथ ही अपना मनोरंजन भी कर सकते है। यादगार पलों को कैमरा या विडियो के जरिये अपने मित्रों के साथ साझा कर सकते हैं और हर पल सबसे जुड़े रह सकते हैं।

संचार क्रांति के बहुत सारे फायदे हैं। देखा गया है कि स्मार्ट फ़ोन का बाजार बढ़ने, उसके सस्ते होने और डाटा सस्ता होने की वजह से आज हर एक व्यक्ति के पास स्मार्ट फ़ोन का होना आम बात हो गयी है। अतः वह हर एक सेकण्ड अपने मित्रों और सहकर्मियों से जुड़ा रहता है। यह बहुत अच्छी बात है । मगर इस सुविधा का विवेकपूर्ण इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

आप अपने आस–पास देखिए – हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों तथा बाजारों पर राहगीर, वाहनचालक आदि सभी लोगों के हाथ में स्मार्ट फ़ोन है और हर पाँच मिनिट में वो उसे चैक करते रहते हैं। हर पल फेसबुक पर "मेरे पोस्ट को किसने लाईक किया ? व्हॉट्सएप्प मैसेज तो नहीं आया ? किसी ने मेरे ट्वीट को रीट्वीट किया कि नहीं ?" ये चिंताएं आज के जनरेशन की सबसे बड़ी चिंताएं बन गई हैं। वे चाहते हैं कि फेसबुक के आभासी (वर्चुअल) मित्रों से बात की जाये जिनसे वे कभी मिले ही नहीं।

इनका सबसे अधिक प्रभाव नई पीढ़ी पर दिखने को मिलता है। एक क्लिक में सब कुछ हाजिर हो जाने की ललक से उनमें धैर्य का अभाव पनप रहा है । आप भी स्मार्ट फ़ोन और सोशियल मीडिया का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करते हैं तो आप पाएंगे कि आपका मन अधिक चंचल हो रहा है, ध्यान का अभाव रहेगा, आप बेवजह स्मार्ट फ़ोन उठाकर देखते है, बेमतलब की बातें पढ़ते है और उसे आगे भेजते है। इस प्रवृत्ति में आपका इतना समय व्यर्थ हो रहा होगा जिस समय को आप किसी सृजनात्मक काम में उपयोग में ले सकते थे – जैसे ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ना इत्यादि।

मैं स्मार्ट फ़ोन और सोशियल मीडिया का कतई विरोधी नहीं हूँ पर जब किसी चीज़ की ऐसी आदत लग जाए कि वो खतरे का स्वरूप बन जाए तो हमें सचेत हो जाना चाहिए। आपके बच्चों व मित्रों को इस व्यसन से मुक्ति हेतु प्रेरित करिये क्यूंकि और भी काम है क्योंकि और सृजनात्मक है जिससे आपके व्यक्तित्व को नया आयाम मिलता है, इसलिए स्मार्ट फ़ोन को अपने जीवन का एक छोटा समय दीजिए, बाकि समय अपने मित्रों तथा परिवार को दीजिए।

अंत में, मैं यही कहना चाहूँगा – अति सर्वत्र वर्जयते, अस्तु।

राहुल परमार, सहायक आयुक्त

दरयाई गश्त की रोमांचक दास्तां

वर्ष 2010 में मैं जामनगर सीमा शुल्क(निवारक) विभाग में अधीक्षक के रूप में कार्यरत था। एक दिन सुबह कार्यालय पहुंचने पर सूचना मिली कि दुबई से दो जहाज डीजल की बड़ी भारी मात्रा लेकर मांडवी, मुंद्रा, ओरदा होते हुए पोरबंदर जायेंगे। बताया गया कि ये जहाज डीजल की तस्करी में लिप्त हैं। सूचना की गंभीरता को देख कर इस पर तुरंत विचार–विमर्श किया गया और तत्कालीन संयुक्त आयुक्त महोदय ने निवारक विभाग की एक विशेष टुकड़ी बना कर हमें जामनगर से ओखा जाने के निर्देश प्रदान किये। ओखा के लिये प्रस्थान करने से पहले ही मैंने वहां फोन करके वहां की सीमा शुल्क मरीन स्क्वाड में तैनात पैट्रोलिंग बोट को भी मुस्तैद रहने का संदेश दे दिया।

जामनगर से ओखा की दूरी 200 किमी है और रास्ता भी बहुत अधिक सुगम नहीं है। अंततः हम ओखा पहुँचे और ओखा बंदरगाह पहुंच कर वहां दो दलों में विभाजित हो गये। एक दल का कार्य समुद्री तट पर गश्त करते हुए निगाह रखना था और दूसरे दल का कार्य ओखा से मरीन बोट से समुद्र में जाकर उन दो समुद्री जहाजों की तलाश करनी थी जिनके बारे में हमें सूचना मिली थी और जो ओखा होते हुए पोरबंदर जाने वाले थे।

यहां यह जानकारी देना भी जरूरी है कि अप्रैल माह के अंत में इस तरफ समुद्र अपने पूरे उफान पर होता है। छोटी नावों को समुद्र में जाने के लिये मना कर दिया जाता है। जिस दिन हम गये उस दिन भी समुद्र अपने पूरे जोश में था। निर्देशानुसार उस दिन मैं अपनी टीम को लेकर ओखा जेटी पर गया और वहां से मरीन स्क्वाड की बोट लेकर हम पैट्रोलिंग के लिये निकल पड़े। यद्यपि हमने जामनगर से रवाना होने से पहले ही यह संदेश भिजवा दिया था कि बोट को तैयार रखा जाये लेकिन यहां आने पर पता चला कि उसमें खाने–पीने का कुछ भी सामान नहीं रखा गया था। इतना ही नहीं, पूरी मात्रा में डीजल भी नहीं भरवाया गया था। लेकिन मौके की नजाकत को देखते हुए हमने कुछ फल, बिस्किट, पानी आदि लिया और अपने मिशन पर रवाना हो गये।

बीच समुद्र में जाकर हम मुंद्रा से आने वाले जहाजों की नजदीक से निगरानी कर लेते थे। हमें दोनों जहाजों के नाम भी बता दिये गये थे इसलिये हम प्रत्येक जहाज का नाम भी ध्यान से देख रहे थे। समुद्र की लहरें मस्ती में नाच रही थी और हमारी छोटी–सी नैया इन लहरों के साथ हिचकौले खा रही थी। हमारे दिल भी लहरों के समान ही ऊँचे नीचे हो रहे थे। डर भी लग रहा था लेकिन मिशन पूरा करने के दृढ़ निश्चय से हिम्मत भी मिल रही थी। हम भीग भी रहे थे।

कुछ समय पश्चात नाव के कप्तान ने कहा कि अब हम अधिक समय तक समुद्र में नहीं रह सकते क्योंकि डीजल भी कम था और ऐसे तूफान में लंगर डालना भी खतरनाक था। मौके की नजाकत एवं अपने अनुभव के आधार पर हमने डीजल की मात्रा के आधार पर कुछ समय के लिये गश्त जारी रखी। लेकिन दूर दूर तक उन दोनों जहाजों का नामोनिशान तक नहीं दिख रहा था। संपर्क करने पर ज्ञात हुआ कि वे दोनों जहाज शारजहां से पुराने मुंद्रा पोर्ट पर टायर लेकर आये थे और वहां से भारी मात्रा में डीजल के साथ मुंद्रा से देर से ही चले थे। इस कारण हमने भी अपनी बोट को वापस घुमा लिया।

वापस आकर हम सड़क मार्ग से पोरबंदर पहुंच गये और दूरबीन के माध्यम से समुद्री मार्ग की निगरानी करते रहे। कुछ समय बाद हमें दो जहाज जय सागर और हैयद दिखाई दिये जिनकी हम बड़ी सिद्दत से तलाश कर रहे थे। हम तुरंत जेटी पर पहुंचे और जहाज के वहां लंगर डालते ही जहाज की तलाशी ली। तलाशी के दौरान हमें अवांछित मात्रा में डीजल प्राप्त हुआ और हमनें डीजल और जहाजों की जब्ती की कार्यवाही शुरू की। इस तरह हमारी एक रोमांचक खोज का सुखद अंत हुआ।

सुनिल कुमार मेहता, अधीक्षक

जिसकी लाठी उसकी भैंस

एक बार गांव का एक आदमी पशु मेले में भैंस लेने गया। वहां उसे एक भैंस पसंद आ गयी और उसने वह भैंस खरीद ली। भैंस लेकर वो अपनी मस्ती में गाता गुनगुनाता हुआ अपने गांव की तरफ जा रहा था। रास्ते में एक जगह पहाड़ी रास्ता आया जो सुनसान था। लेकिन वह ग्रामीण व्यक्ति अपनी मस्ती में चल रहा था। भैंस की रस्सी एक हाथ में लिये और दूसरे हाथ में अपने खाने की गठरी।

अचानक सुनसान मोड़ पर एक व्यक्ति उस ग्रामीण के सामने आ खड़ा हुआ। यह एक लूटेरा था जिसके हाथ में बड़ा–सा लट्ठ था। लूटेरे ने अपनी लाठी घुमाई और कड़क आवाज में बोला– ''अपनी जान की खैर चाहता है तो यह भैंस तुरंत मेरे हवाले कर दे।''

ग्रामीण ने लूटेरे को देखा। उसकी लाठी देखी। माहौल देखा। वह ग्रामीण होश्यिार था और तुरंत स्थिति को समझ गया। उसने सोचा अगर उसने आनाकानी की तो यह लूटेरा एक ही वार में उसका सर फोड़ देगा। उसने उदास मन से तुरंत भैंस उस लूटेरे के हवाले कर दी और बोला–''ले भाई, यह भैंस अब तू ले जा। लेकिन जब मैं घर जाउंगा तो घरवालों के सामने खाली हाथ कैसे जाउंगा?''

यह सुनकर लूटेरे का दिल थोड़ा–सा पसीज गया और उसने अपनी लाठी उस ग्रामीण को देते हुए कहा–''यह ले लाठी। इसे ले जा। अब तू खाली हाथ नहीं रहा। आराम से घर जा।''

लूटेरा लाठी ग्रामीण को देकर जैसे ही जाने लगा तो ग्रामीण ने तुरंत जोरदार आवाज में कहा–''अरे ओ मूर्ख! जाता कहाँ है? चुपचाप मेरी भैंस मेरे हवाले कर और अपना रास्ता पकड़। थोड़ी भी चूं की तो अभी खोपड़ी फोड़ दूंगा।''

लूटेरा भी समझ गया कि उसने लाठी ग्रामीण को देकर गलती कर दी है। उसने तुरंत भैंस वापस ग्रामीण के हवाले की और बोला–''यह ले भाई तेरी भैंस और मेरी लाठी मुझे वापस लौटा दे।''

ग्रामीण ने हंसते हुए जवाब दिया–''बावला हो गया है क्या तू। जिसके हाथ में लाठी है भैंस वही ले जायेगा।''

लूटेरा चुपचाप निकल गया। तब से कहावत बन गयी–''जिसकी लाठी उसकी भैंस।''

जिग्नेश शाह, निरीक्षक

हमारा आयुक्तालय परिवार

उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड एवं सहायक आयुक्त श्री संजय श्रीवास्तव के साथ स्थापना तथा प्रशासन अनुभाग परिवार

सहायक आयुक्त श्री पी. एन. झा के साथ न्याय निर्णय एवं सेवोत्तम अनुभाग परिवार

आयुक्त महोदय श्री जे.ए. खान (बीच में बैठे हुए), अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम (दायें) एवं संयुक्त आयुक्त श्री ज्ञानचंद जैन (बांयें) के साथ अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय के अधिकारीगण

सहायक आयुक्त श्री एच. एस. चौधरी के साथ पद्धति एवं प्रबंधन तथा आंकड़ा प्रबंधन अनुभाग परिवार

सहायक आयुक्त श्री अतुल चतुर्वेदी के साथ विधि एवं समीक्षा अनुभाग परिवार

उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड के साथ लेखापरीक्षा तथा तकनीकी अनुभाग परिवार

सहायक आयुक्त श्री ए. के. श्रीवास्तव के साथ लेखा अनुभाग परिवार

उपायुक्त श्री धर्मराज सिंह के साथ निवारक अनुभाग परिवार

सहायक आयुक्त श्री संजय श्रीवास्तव के साथ सतर्कता एवं भूमि व भवन अनुभाग परिवार

उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ के साथ प्रणाली एवं कर वसूली अनुभाग परिवार

वरिष्ठ अधिकारियों के निजी सहायकगण

हमारा आयुक्तालय परिवार

उपायुक्त श्री प्रणेश गुप्ता के साथ एसजी हाईवे पूर्व मंडल परिवार

उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ के साथ हेड हवलदार एवं हवलदारगण

उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ एवं जनसंपर्क अधिकारी श्री आर. के. चौहान के साथ हवलदारगण

हेड हवलदार एवं हवलदारगण

उपायुक्त श्री दिनेश कुमार जांगिड़ के साथ सफाईकर्मीगण

आयुक्त महोदय श्री जे.ए. खान (बीच में बैठे हुए), अपर आयुक्त श्री राजमोहन गौतम (दायें) एवं संयुक्त आयुक्त श्री ज्ञानचंद जैन (बांयें) के साथ अहमदाबाद उत्तर आयुक्तालय के अधिकारीगण

वस्तु एवं सेवा कर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद उत्तर

कस्टम हाउस, ऑल इंडिया रेडियो के पास में, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009
079 - 27544599 E-mail : commr-cexamd2@nic.in